ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 06 मार्च 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 06 मार्च 2016 से 12 मार्च 2016

फा.कृ –12 ● वि० सं०–2072 ● वर्ष 58, अंक 62, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,116 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश उपसभा ने आयोजित किया आर्य महासम्मेलन

आर्य जगत् के सभी पाठ्कों को ऋषि बोध उत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं ईश्वर हम सब को सत्य के प्रति जागते रहने कि प्रेरणा दे।

– सम्पादक

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में क्षेत्र स्तरीय द्वि–दिवसीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आमदी नगर, हुडको भिलाई में किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि थे आर्य रत्न, माननीय डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा व डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली। विशेष अतिथि के रूप में श्रीमती मणी सूरी जी (नई दिल्ली), मंत्री श्री एस.के. शर्मा जी, डॉयरेक्टर पब्लिक स्कूल नई दिल्ली–डॉ. श्री वी. सिंह तथा संन्यासियों में स्वामी धर्मानंद सरस्वती जी, स्वामी सुधानंद सरस्वती जी, स्वामी नारदानंद सरस्वती जी व स्वामी हरदानंद सरस्वती जी उपस्थित रहे।

वैदिक मर्मज्ञ डॉ. वागीश कुमार शर्मा (अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वान) का हृदय ग्राही प्रवचन हुआ। मुख्य अतिथि द्वारा डॉ. वागीश को पुष्पहार, शॉल व श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया। आमंत्रित अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया गया। डी.ए.वी. भटगाँव द्वारा पुस्तुत छत्तीसगढ़ी स्वागत गीत–"आगे–आगे अतिथि मन आगे जी" ने समा बाँधा। स्वागत भाषण के माध्यम से आर्य महासम्मेलन के पीछे छिपे महाउद्देश्य का प्रतिपादन करते हुए श्री प्रशांत कुमार प्रधान उपसभा ने कहा–आर्य महासम्मेलन का आयोजन मानव जीवन को किस प्रकार सुखी बनाया जाय इस महान उद्देश्य को लेकर किया गया है। डी.ए.वी. हुडको द्वारा प्रस्तुत भजन–"आनंद स्त्रोत बह रहा पर तू उदास है। अचरज है जल में रहके भी मछली को प्यास है' से श्रोता समुदाय मंत्रमुग्ध हो उठे।

मुख्य अतिथि द्वारा डी.ए.वी. गेवरा के छात्र करणसिंघानिया तथा डी.ए.वी. हुडको के छात्र शुभाशीष सिंह का सम्मान शैक्षणिक कीर्तिमान स्थापित करने के क्षेत्र में किया गया। डॉ. वागीश शर्मा ने आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा–"वैदिक आदर्शों के अनुरूप चलकर ही वर्तमान संसार की सारी मानवीय समस्याओं का समाधान ढूँढा जा सकता है क्योंकि वैदिक आदर्श किसी देश, समाज या वर्ग विशेष को लक्ष्यकर निर्मित नहीं हुए हैं। सम्पूर्ण प्राणी जगत् की मंगल कामनाएँ वेदों में उल्लेखित हैं। वैदिक आदर्शों का परिपालन कर समग्र संसार को सुखी बनाया जा सकता है। मानवीय चरित्र की उदात्तता से ही सुखी संसार का निर्माण सम्भव है।"

दूसरे दिन डी.ए.वी. हुडको भिलाई में नव निर्मित 'आनंद स्वामी बहुउद्देशीय सभागार' का उद्घाटन माननीय डॉ. पूनम सूरी जी के हाथों से हुआ। अपरान्ह कालीन सत्र यज्ञ–हवन को समर्पित रहा जहाँ वेदाचार्यों के द्वारा यज्ञ संपन्न कराया गया। समग्र प्रांगण वैदिक ऋचाओं की अनुगूंज से गूंज उठा। माननीय डॉ.श्री पूनम सूरी के द्वारा पुष्प–वृष्टि के माध्यम से आशीर्वाद दिया गया।

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक छटा के साथ सांध्यकालीन सत्र का आगाज़ मुख्य अतिथि तथा मुख्य अतिथि द्वारा आर्य विद्वानों एवं आर्य संन्यासियों का सम्मान पुष्पहार, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र प्रदान कर किया गया।

आर्य महासम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा–भिलाई की यात्रा मुझे सदा–सर्वदा याद रहेगी। काश! मैं भिलाई पहले आया होता। आप सबका प्यार, इतनी श्रद्धा, अगाध प्रेम देख मैं गद्गद् हो उठा हूँ। मुझे राज्य अतिथि का सम्मान दिया गया। स्वामी दयानन्द के आदर्श को आगे बढ़ाने में डी.ए.वी अविस्मरणीय योगदान दे रहा है। जहाँ तक आओ संसार सुखी बनाएं' की बात है तो मैं उस सुख की बात कर रहा हूँ जो अन्दर से पैदा होता है। वह सुख आत्मीय सुख है। मुस्कान वह है, जो हृदय से पैदा हो। सुखी संसार बनाने के लिए हमें दूसरों के दु:ख को दूर करना पडे़गा। डी.ए.वी. का अस्तित्व स्वाध्याय पर खड़ा है। स्वाध्याय को मत छोड़ो, स्वाध्याय को अपनाओ यही सुख का आधार है।"

स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर आधारित नृत्य नाटिका 'ऋषि गाथा' की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति की गई जिसे देख दर्शक भावविभोर हो उठे। ऋषि के जीवन का दिग्दर्शन कराने वाली इस नृत्य नाटिका का निर्देशन श्री अजय ठाकुर ने दिया था। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनियों में सभ्यता व संस्कृति की झलक मुखरित हुई।

इस अवसर पर आचार्य जातवेदा, डॉ. अजय आर्य, डॉ. शिवशंकर शास्त्री, डॉ. प्रेम प्रकाश शास्त्री, आचार्य अंशुदेव स्वामी, महात्मा चैतन्य मुनि, माता सत्यप्रिया (हिमाचल प्रदेश) स्वामी शांतानन्द (राजस्थान), श्रीमती सुब्रता कुमार, विभिन्न डी.ए.वी. विद्यालयों से आए हुए प्राचार्यगण सहित अनेक गणमान्य नागरिक, पालक, अभिभावकगण तथा शिक्षक–शिक्षिकाएँ व छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री कर्मवीर शास्त्री व डॉ. सुरेन्द्र देव पाण्डेय तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री एस.के. सिन्हा (उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़) ने किया। शांति पाठ के साथ आर्य महासम्मेलन सोल्लास संपन्न हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

आर्य जगत्

सप्ताह रविवार 06 मार्च, 2016 से 12 मार्च, 2016

जंगम - स्थावर का राजा

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा, शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनाम्, अरान्न नेमिः परि ता बभूव।।

ऋग् 1.32.15

ऋषिः **हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः।** देवता **इन्द्रः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(वज्रबाहु)** वज्रभुज **(इन्द्रः)** परमेश्वर **(यातः)** चलने–फिरने वाले का, **(अवसितस्य)** निश्चल का **(शमस्य)** शांत का, **(शृङ्गिण च)** और तीक्ष्ण वृत्ति वाले का **(राजा)** राजा [है]। (सः इत्) वही **(चर्षणीनां)** मनुष्यों का **(राजा)** राजा [होकर] **(क्षयति)** निवास कर रहा है। **(अरान्)** अरों को **(नेमिः न)** परधि के समान [वह] **(ता)** उन्हें **(परि बभूव)** चारों ओर से व्याप्त किये हुए है।

● मैं अपने इन्द्र प्रभु का क्या वर्णन करुँ, कैसे उसकी महिमा का गान करूँ? उसकी महिमा के गीत गाने को जो जी चाहता है, पर वाणी में शब्द नहीं मिलते। फिर भी टूटे–फूटे शब्दों में ही सही, कुछ तो गुनगुना लूँ, कुछ तो अपने मन की साध पूरी की लूँ। मेरा प्रभु चलने फिरनेवाले जंगम अर्थात् चेतन जगत् और निश्चल होकर बैठ स्थावर अर्थात् जड़–जगत् दोनों का राजा है, दोनों पर उसका अधिपत्य है। वह पशु, पक्षी, सरीसृप, मानव आकद तथा वन, पर्वत, नदी, सागर, सूर्य, चन्द्र आदि सबका अधिष्ठाता और व्यवस्थापक है। उसकी आज्ञा के बिना एक पत्ता तक नहीं हिल सकता। वह शान्त–जीवन व्यतीत करने वाले, तप–साधन में निरत रहने वाले शान्तवृत्ति ऋषि–मुनियों का भी राजा है और तीक्ष्णश्रृंग अर्थात् तीक्ष्ण साधनों का अवलम्बन करने वाले तीक्ष्णवृत्ति रजोगुणियों का भी राजा है, नियन्त्रधकर्ता है। वह वज्रबाहु है, भुजा में वज्र धारण किये है और उच्छृङ्खलों को उनके उच्छृङ्खल कर्मों के अनुसार यथायोग्य दण्ड दे रहा है। कोई उसकी दण्ड–व्यवस्था से कितना ही बचना चाहे, बच नही सकता। वही हम सब 'चर्षणियों' का कृषिकर्ता मानवों का भी राजा होकर निवास कर रहा है, चाहे हम अपनी मनोभूमि का कर्षण करके उसमें सद्गुणों का बीज वपन कर आन्तरिक सम्पदा को लहलहाते हों, चाहे हल चलाकर, उत्तम बीज बोकर भूमि को सस्यश्यामला बनाते हों।

जैसे रथ–चक्र की नेमि समस्त घरों को चारों ओर से व्यापत किये होती है और अपने में थामे होती है, वैसे ही जगत् का राजा वह इन्द्रदेव जगत् की वस्तुओं के चारों और व्याप्त होकर उन्हें सहारा दिये हुए है, तभी संसार के सब पदार्थ पृथक्–पृथक् इकाई होते हुए भी परस्पर सामंजस्य रखेहुए हैं और विश्व के चक्र को चला रहे हैं। अन्यथा उनकी स्थिति वैसी ही हो जाए, जैसी नेमि के टूट जाने पर रथ–चक्र के घरों की होती है, तब विश्वचक्र –प्रवर्तन ही समाप्त हो जाए।

आओ, हम एक स्वर से अपने उस राजराजेश्वर इन्द्र प्रभू के चरण–चंचरीक बनकर उसकी महिमा का गुंजार करें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु - भक्ति

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में हमने पढ़ा जो मनुष्य सत्य, प्रेम, भक्ति से परमेश्वर की उपासना करेंगे, उन्हीं उपासकों को परम कृपामय अन्तर्यामी परमेश्वर मोक्ष देकर सदा के लिए आनन्दयुक्त कर देगा। जब उपासना करना चाहे तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर आसन लगा, प्रणायाम कर ब्राह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि प्रदेश में, हृदय ,कृष्ठ, नेत्र, शिक्षा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थित कर, अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो जाने से संयमी हावे। जब इन साधनों को करता है तब उसका आत्मा और अन्तः करण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। इसके लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आवश्यक है।

इस अंक में पढ़ें मन की बात

मन की बात

भगवान् के मन्दिर में प्रत्येक इन्द्रिय और प्रत्येक नाड़ी काम आने वाली है। नाड़ियों' द्वारा ही उपासना करनी होती है। परन्तु इन सब में सर्वोपरि मन है और सच पूछिये तो यह मन की ही कृपा है कि हम इस शरीर में बैठे हैं। प्रश्न–उपनिषद् में तीसरा प्रश्न यही है कि यह इस शरीर में कैसे आता है? इसका उत्तर उपनिषद् ने यह दिया है–

मनोऽधिकृतेनायात्यस्मिञ्छरीरे।

अर्थात् मन के काम से यह शरीर में आता है–"जो मन से शुभ–अशुभ संकल्प किये जाते हैं, उनके कारण से यह शरीर में आता है।"

महाभारत में भी यही कहा है–

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

"मन ही मनुष्य के बन्धन का और मन ही मनुष्य के मोक्ष का कारण है।"

वेद भगवान् ने तो सबसे पहले यह आदेश किया है कि मन के बिना कोई भी काम नहीं किया जा सकता–

यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। (यजु. 34–3)

उपासना नाड़ियों ही के द्वारा धारण करनी होती है। सित इड़ा और असित पिंगला–ये दोनों जहाँ मिल जाती हैं, उसको सुपुम्णा कहते हैं। उसमें योगाभ्यास से स्नान करके जीव शुद्ध हो जाता है। (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका)

यही है वास्तव में कुञ्जी सब कर्मों की। यदि यह हाथ में आ जाय तो सब–कुछ मिल जाता है। निस्सन्देह, परमात्मा तक मन की भी पहुँच नहीं, परन्तु यह एक प्रमाणित सत्य है कि प्रभु–निवास के द्वार तक पहुँचा भी यही सकता है। इसकी शक्ति बहुत बड़ी है और श्री शंकराचार्य जी ने तो इसकी महिमा और भी बढ़ा दी है। किसी ने प्रश्न पूछा–

"जितं जगत् केन?"

उन्होंने उत्तर दिया–**"मनो हि येन!"** अर्थात् संसार को किसने जीता? जिसने मन पर विजय पा ली। छान्दोग्य उपनिषद् प्रपाठक 7 खण्ड 3 के आदि ही में यह कहा गया है–**मनो ह्यात्मा मनो हि ब्रह्म मन उपास्स्वेति**–"मन निस्सन्देह आत्मा है, अर्थात् मन ही लोक तथा ब्रह्म की प्राप्ति का साधन है। लोक–परलोक दोनों मन ही से सिद्ध होते हैं।" ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल में एक सुन्दर मन्त्र है जिसमें यह आदेश किया है कि–

स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित्। (ऋ. 5–30–14)

'हे ईश्वर की इच्छा करनेवाले! यदि तू समर्थ होकर मन को स्थिर करे तो तू अकेला ही बहुतों को भी युद्ध के लिए जीत सकता है–पर्याप्त है।'

मन की इतनी बड़ी महिमा है। चाहे इस लोक का अभ्युदय प्राप्त करना हो, चाहे ब्रह्मलोक में पहुँचना हो, दोनों के लिए मन का स्थिर करना अनिवार्य है।

इसके साथ यह सदा सम्मुख रखिये कि मन और शुष्क्र अर्थात् वीर्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। 'हठयोग–प्रदीपिका' में एक बड़ा मार्मिक श्लोक आता है–

चित्तायत्तं नृणां शुक्रं, शुक्रायत्तं च जीवितम्।
तस्माच्छुक्रं मनश्चैव रक्षणीयं प्रयत्नतः।।

"मनुष्यों का शुष्क्र (वीर्य) चित्त के अधीन है अर्थात् चित्त के चलायमान होने पर वीर्य भी चलायमान हो जाता है, इससे शुष्क्र मन के वशीभूत है; और मनुष्यों का जीवन शुष्क्र के अधीन है अर्थात् शुष्क्र की स्थिरता से जीवन, और शुष्क्र की नष्टता से मरण होता है, इसलिए जीवन शुष्क्र के अधीन है। इसलिए यह आवश्यक है कि शुष्क्र और मन की भली प्रकार यत्न से रक्षा करे।" इसका प्रयोजन यही है कि यदि जीवन की कामना है तो मन को स्थिर रखने का प्रयत्न करो।

ऐसा है वह मन जो इस प्रभु–मन्दिर

में वास करता है। जब तक इसको अपना साथी अथवा मित्र न बना लिया जाय, तब तक यह बाधक बनकर हमें तंग करता रहेगा और प्रभु–मन्दिर में पहुँचकर भी प्रभु–दर्शन से वंचित रखेगा। गंगा में खड़े होकर भी जलपान नहीं करने पायेंगे, प्यासे–के–प्यासे ही रह जायेंगे। इसलिए सबसे पहले मन की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। एक उर्दू कवि ने भी कहा है–

बड़ी नायाब[1] शै है यह दिले–बेताब[2] सीने में।
हजारों क़ीमती लालो–गुहर[3] हैं इस दफ़ीने[4] में।।

और एक दूसरे कवि को तो 'दिल' ही भगवान् का निवास–स्थान दिखाई दिया। वह कहता है:–

ख़ानये–दिल[5] में मिले वो जलवागर।
दर–बदर[6] भटका किये जिसके लिए।।

1. न मिलने वाली। 2. चंचल मन। 3. हीरे–पन्ने–रत्न। 4. ख़ज़ाना। 5. मन के अन्दर। 6. द्वार –द्वार पर।

तो इसकी ओर से नेत्र बन्द नहीं किये जा सकते, अपितु पहले इसी की शरण लेनी पड़ती है। यदि मन हाथ में आ गया तो फिर प्रभु के दरबार में बेखटके पहुँचा जा सकता है। यह कार्य कहने को तो सरल है, किन्तु करने को अत्यन्त कठिन है। गीता में अर्जुन भी तो यह पुकार उठा था–"हे महाराज! यह मन बड़ा चंचल और प्रमथन

स्वभाववाला है तथा बहुत दृढ़ और बलवान् है। इसलिए इसको वश में करना मैं वायु की भाँति दुष्कर मानता हूँ।" और कृष्ण भगवान् ने भी यह कहा है कि निस्सन्देह मन बड़ा चंचल और कठिनता से वश में होनेवाला है, किन्तु धैर्य देकर यह भी कहा कि अभ्यास और वैराग्य से यह वश में किया जा सकता है।

पहला साधन–ज्ञान

मन को वश में करने का सबसे पहला साधन है 'ज्ञान'। यदि यह ज्ञान हो जाय कि इस संसार की वस्तुओं की वास्तविकता और मूल्य क्या है, तो फिर यह इसके पीछे मारा–मारा न फिरेगा। जब यह पता मिल गया कि मनुष्य का सौन्दर्य केवल मलमूत्र का परिणाम है तो फिर मन उस सौन्दर्य पर लट्टू क्यों होगा? जब विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया कि हीरा–कोयला एक–जैसे तत्त्वों के बने हुए हैं, तो फिर हीरे की प्राप्ति के लिए मन कोई टेढ़ी चाल नहीं चलेगा। जब ज्ञान हो गया कि यह जो कुछ दिखाई देता है, सब नश्वर है, तो फिर इन खिलौनों के लिए मन दुःखी नहीं होगा, तब विषय–वासना नहीं सतायेगी, तब मोह, लोभ, अहंकार आदि कष्ट नहीं दे सकेंगे। सच ही तो कहा है कवि ने–

मन–पक्षी तब लग उड़े विषय–वासना माहिं।
ज्ञान–बाज की झपट में जब लग आया नाहिं।।

इसकी दौड़–धूप, उछल–कूद तब तक ही है, जब तक इसे सांसारिक वस्तुओं का वास्तविक ज्ञान नहीं हो जाता। इसलिए सबसे पूर्व मन को समझाइये और उसे कहिये कि देख भाई, जिस सुन्दरता पर तू रीझा है, वह तो पर्दे से ढकी गन्दगी है। उस पर्दे को हटा दे, उस गन्दगी को बाहर आने दे और फिर देख कि तू मुँह फेर लेता है या नहीं? जिस धन के पीछे तू पड़ा है, और जिसके लिए तू नित्य–नये झूठ तथा दम्भ करता है वह भगवान् की नदियों और पर्वतों से निकली हुई धातुएँ ही तो हैं! वह मिट्टी और पत्थर ही तो है! और फिर वे सदा किसी के पास ठहरते नहीं। आज तूने अत्यन्त यत्न से उन्हें इकट्ठा किया, प्रभु–प्रजा को सताकर, अनाथ बच्चों के अधिकार पर छापा मारकर, निस्सहाय विधवाओं के वस्त्र उतारकर, निर्बल लोगों और जातियों पर आक्रमण करके, लाखों मनुष्यों के गले काटकर, निर्धन दुःखी हरिजनों की मेहनत–मजूरी–कमाई को टैक्स, कर और दूसरे नामों से लूटकर भोले–भोले, सीधे–सादे प्रभु–प्रेमियों को कई चालों में घेरकर यदि इन ठीकरियों को इकट्ठा कर भी लिया तो क्या विश्वास है इस बात का कि कल तक यह तेरे पास रहेगी या तुझसे अधिक बलवान्, अधिक चालबाज़, अधिक कपटी सब–कुछ छीन न लेगा या तू ही मृत्यु का ग्रास न बन जायेगा?

इस प्रकार का ज्ञान जब मन को मिलेगा तो फिर यह नहीं हो सकता कि नश्वर सांसारिक पदार्थों के पीछे भटकता फिरे और अपने धर्म से विमुख हो जाय। तब यह धर्माचार पर आरूढ़ हो जायेगा, नेक कमाई की ओर ध्यान देगा और अपने–आपको विषय–वासनाओं से सुरक्षित रखेगा। इसके साथ यह भी जानना होगा कि परमात्मा क्या है। यदि इस शरीर में रहते हुए उसे न जाना तो भारी हानि होगी। केन–उपनिषद् में कहा है–

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।। (2–5)

"वहाँ (इसी जन्म में) ही यदि जान लिया तो ठीक है, यदि नहीं जाना तो बड़ा भारी नाश है। अतएव धीर पुरुष सब भूतों में उसको जानकर इस लोक से अलग हो अमृत होते हैं।"

इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद् ने भी यही चेतावनी दी है–

इहैव सन्तोऽथ विद्मस्तद्वयं न चेदवेदीन्महती विनष्टिः।
ये तद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवाभियन्ति।। (4–4–14)

"यहाँ रहते हुए हम उसको जान सकते हैं और यदि मैं यदि ज्ञान–हीन रहता तो एक भारी विनाश है। जो उसको जानते हैं वे अमृत होते हैं, पर दूसरे दुःख ही अनुभव करते हैं।"

दूसरा साधन–बुरे संकल्पों की निवृत्ति

ज्ञान–प्राप्ति से मन के नेत्र खुल जाने के पश्चात् भी यह सम्भव है कि किसी अवसर पर 'तमाशा' देखने के लिए ही यह फिसल पड़े। इसलिए दूसरा साधन मन को वश में करने का यह है कि "बुरे संकल्पों से मन को बार–बार रोकें।" यह अभ्यास कुछ समय लेगा। आपने कई बार अनुभव किया होगा कि मकान की सबसे पीछे की कोठरी में बैठे नेत्र बन्द करके जब मन्त्रों का मानसिक जाप करने लगते हैं तो थोड़ी देर बाद आप देखते हैं कि यह हज़रत सब द्वारों को पार करके कहीं–के–कहीं निकल गये हैं और वहाँ अपनी मनामनी में लगे हैं। 'अरे! यह क्या? तुझे तो मन्त्र–जाप पर लगाया था, तू यह क्या करने लगा?' बस, इस प्रकार स्वतन्त्र होने से रोकिये। यह बिना आज्ञा किसी भी संकल्प को हमारे अन्दर न लाने पाय, इसके लिए मन पर कड़ी निगरानी रखें। जब भी यह कोई बुरा संकल्प लेकर आये तो तत्काल उस बुरे संकल्प को मन से बाहर निकाल दीजिये। वेद भगवान् में इसके सम्बन्ध में एक बहुत सुन्दर मन्त्र आता है–

परोऽपेहि मनस् पाप किमशस्तानि शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि सञ्चर गृहेषु गोषु मे मनः।। (अथर्व. 3–5–1)

"हे मन के पाप! दूर हो जा, भाग जा यहाँ से। यह क्या बुरी बात तू मुझे सिखलाने आया है? जाओ, मुझे तुम्हारी कामना नहीं है। वनों के वृक्षों को जाकर चिपटो, मैं तो अपने मन के घर की सफ़ाई में संलग्न हूँ।" जब भी कोई बुरा संकल्प आने लगे, उसी समय पूरे बल के साथ इस मन्त्र द्वारा उसे बाहर धकेल दीजिये।

एक लड़का बड़ा नटखट था। मुहल्ले–भर के लड़कों से लड़ता–झगड़ता, स्त्री–पुरुष, बच्चों–बुढ़ों सबको सताता। किसी का चरखा तोड़ दिया, किसी का दुपट्टा फाड़ डाला, किसी के चपत लगा दी, वह रोया, वह गिरा, इधर दौड़ा, उधर दौड़ा; भागकर अपने घर आता। लड़के की माता को नित्य ही उलाहने आने लगे। अड़ोसी–पड़ोसी उसकी माता के पास पहुँचे; बोले–"देखो मासी! यह तुम्हारा लड़का इस योग्य नहीं कि मुहल्ले में जाये। इसे अपने ही पास रखा करो।" माता ने लड़के को आज्ञा दी कि "बस, अब तुम मेरे निकट बैठे रहो। अब कहीं न जा सकोगे तुम।" लड़का चुपचाप बैठ गया, जैसे बहुत ही आज्ञाकारी और नेक हो। माता ने समझा अब सुधर गया वह, लेकिन जैसे ही वह अपने धन्धे में लगी और लड़के ने देखा कि माता की आँख उधर है, झट खिसकने लगा। अभी दो ही कदम गया था कि माता ने देख लिया–"बैठ यहाँ! कहाँ जाता है? बैठा रह इसी स्थान पर! तू बाहर नहीं जा सकता।" लड़का फिर सुधरे हुए बालकों की भाँति बैठ गया। माता फिर काम में लगी। लड़का ताक में था कि कब अवसर मिले और भाग निकलूँ। माता ने फिर देख लिया–"कहाँ जाता है? बैठा रह यहाँ ही! जब तक तू प्रतिज्ञा नहीं कर लेता कि तू बाहर जाकर किसी को नहीं सतायेगा, तब तक तुझे इसी कैद में रहना पड़ेगा।" लड़का फिर भीगी बिल्ली बनकर बैठ गया। माता अपना तो काम करती ही थी, परन्तु दृष्टि लड़के की ओर रखती थी। अन्त में लड़के की चंचलता दूर हुई और उसने किसी को न सताने की प्रतिज्ञा की। तब माता ने उसे बाहर जाने की आज्ञा दे दी।

इसी प्रकार मन पर कड़ी दृष्टि रखनी होगी। जब तक यह बुरे संकल्पों को छोड़ देने की प्रतिज्ञा नहीं करता, तक तक इस पर कड़ी निगरानी रखने की आवश्यकता है। बार–बार अभ्यास करने से यह मन अपनी चंचलता छोड़ने और बुरे संकल्पों से दूर रहने पर बाधित हो जाता है।

क्रमशः....

वैदिक प्रार्थना

मा मा हिँसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा
दिवँसत्यधर्मा व्यानट्।
यश्चापश्चन्द्राः प्रथमो जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम।
यजु. 12.102

He who has created this beautiful earth
and the vast splendid skies
which overcast it
and the rich resources of
life-giving sweet water;
To Him we present our
offerings of devotion.
May He protect us always !

यह धरा जिसने रची है, यह सुविस्तृत
व्योम ताना, ज्योति–जगमग, अटल नियमों से
नियंत्रित,
चित्त–आह्लादक सलिल जिसने बनाये
विपुल विस्तृत, न कभी हमको सताये।
अर्चना नैवेद्य अपने हम उसी के हेतु लाये।

शिवभक्त चेते! क्या शिवरात्रि का शिव शंकर नहीं?

●आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

यह ब्रह्माण्ड बड़ा विशाल है। इस विशाल ब्रह्माण्ड का शासक, प्रशासक, प्रकाशक, रक्षक, धारक, पालक, अविनाशक, संहारक आदि गुण, कर्म, स्वभाव वाला **शिव=कल्याणकारक** ब्रह्म, **ओ३म्** ईश्वर है। यह ब्रह्माण्ड का स्वामी, सर्व मंगलकारक, सुखदायक ईश्वर हस्तपाद, शिर, नयन, कर्ण, नासिका, मुख आदि आकारों वाला एवं पिण्डरूप नहीं है। **वह तो ओ३म् पदवाच्य सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार, अजर, अमर, चेतन शिव=सुखदायक, शंकर=सुखकारक** आदि स्वरूपमय है। यह वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों से सुप्रमाणित है। वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस स्वरूप को ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जाना और माना है। आर्यसमाज के संस्थापक वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द ने भी ब्रह्मादि ऋषियों का ही अनुगमन किया है।

पर वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस सर्वव्यापक, **शंकर=सुखकारक** आदि स्वरूपों से बहुत से मतवादी सहमत नहीं है। उन असहमत मतवादियों में एक ब्रह्माकुमारी मत भी है। **ब्रह्माकुमारी** मत ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं मानता, शंकर ईश्वर का ही विशेषण या नाम है, यह भी नहीं मानता। इस मत की बड़ी विचित्र धोखा देने वाली अवधारणाएँ हैं। मेरे समक्ष इस मत की **शिव और शिवरात्रि, घोरकलहयुग विनाश** पुस्तक एवं **ओम शान्ति मीडिया** समाचार पत्र सामने रखे हैं। जिनमें इनकी शिव ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाएँ लिखी हुई हैं। यह मत वेदोक्त संस्कृति व धर्म का नाशक एवं तथाकथित हिन्दू धर्म की नींव खोदने वाला मत है। **घोरकलहयुग विनाश** पुस्तक के 12 वें पृष्ठ पर हिन्दू मतालम्बियों को **बुतपरस्त हिन्दू** ऐसा सम्बोधन कर उन्हें धिक्कारा है। इस मत के आदि आरम्भक सिन्ध, कराँची वासी लेखराज हैं जिन्हें ब्रह्माकुमारी मत शिव का अवतार मानता है। लेखराज के अनुयायी रामायण को श्रीराम का जीवन चरित्र एवं गीता को कृष्ण का उपदेश नहीं मानते, अपितु **रामायण को उपन्यास** एवं **गीता को लेखराज** का उपदेश मानते हैं। इनके अनुसार **शिव यहूदियों का यहोवा** है एवं **मुहम्मद का अल्लाह शिव है। शिव और शिवरात्रि** पुस्तक के 39 वें पृष्ठ पर पंक्ति है– **परमात्मा के शिव नाम का ही एक रूपान्तर यहोवा है।...** और **वह सर्वव्यापक नहीं है।** इसी प्रकार पृ. 42 पर पंक्ति है–**मुहम्मद साहब ने शिव को ही अल्लाह नाम दिया था, हाँ! वे मूर्त्तिपूजा के विरुद्ध थे।** इन पंक्तियों से सुस्पष्ट है कि यह ब्रह्माकुमारी मत ईसाई, मुसलमानों का छद्मवेशी मत है।

ईश्वर को सर्वव्यापक मानने पर इन्हें जो बाधा लगती है, वह **शिव और शिवरात्रि** एवं **ओम शान्ति मीडिया** के अनुसार यह है कि **यदि कल्याणकारी शिव ईश्वर को सर्वव्यापक मानेंगे, तो सर्वव्यापक तत्व का कहीं आना जाना नहीं हो सकता, अतः उसे मन के समान तीव्र गति वाला भी नहीं कहा जा सकता।** शिव को शंकर न मानने में इनका कथन है– **शिव देवों के देव हैं और शंकर पुरी के निवासी एक देवता की मूर्त्ति है, शंकर शिव का पर्याय शब्द नहीं है।** इस प्रकार लेखराज द्वारा चलाये गये इस मत की अनेक वेद एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध मान्यताएँ हैं।

इस ब्रह्माकुमारी मत को ज्ञात हो कि ईश्वर के स्वरूप, कार्य आदि के ज्ञान में वेद एवं वेदानुकूल शास्त्र ही प्रमाणभूत हैं, अज्ञानी नहीं। अज्ञानी मतवादियों के कथन न प्रमाण योग्य होते हैं, न मानने योग्य। वेदादि शास्त्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रतिपादक अनेकों मण्डल, काण्ड, अध्याय, अनुवाक, सूक्त, मन्त्र, मन्त्रचरण, वाक्य, वचन निर्दिष्ट हैं। उदाहरणरूपेण **अथर्व** मन्त्र है–

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश।

य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये।। अथर्व. 7/91/1

अर्थात् **यः**=जो, **रुद्रः**=रुद्ररूप कर्मानुसार फल द्वारा रुलाने वाला ईश्वर, **अग्नौ**=अग्नि में, **यः**=जो, अप्सु **अन्तः**=जलों के मध्य, **यः**=जो, **वीरुधः**= विविध शाखा एवं पत्र वाली, **ओषधीः**=धान, गेहूँ, कदली आदि ओषधियों में, **आविवेश**=प्रविष्ट है, **यः**=जिस ईश्वर ने, **इमा विश्वा**=इन सब, **भुवनानि**=लोकों को, **चाक्लृपे**=बनाया है, **तस्मै**=उस, **अग्नये रुद्राय**=अग्रणी, प्रेरक रुद्र ईश्वर के लिए, नमः अस्तु=स्तुतियाँ हैं, प्रार्थनायें हैं।

मन्त्र का भाव है, रुद्र ईश्वर जगत् के अग्नि, जल, ओषधि=धन धान्य, वृक्ष आदि पदार्थों में, लोक लोकान्तरों में व्याप्त है, सबसे अग्रगामी है। वह ही सबका उपास्य एवं प्रार्थ्य है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता का निर्देशक यजुः मन्त्र है–

वेनस्तत्पश्यन्निहिंत गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।

तस्मिन्निदँ सं च वि चैति सर्वँ, स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।। (यजु. 32/8 ।

अर्थात् जो **गुहा निहितम्**=बुद्धि में स्थित है, **यत्र**=जिस ईश्वर में, **विश्वम्**=सम्पूर्ण जगत्, **एकनीडम्**=एक आश्रय वाला है, **तत्**=उस, **सत्**=चेतन सत्ता को, **वेनः**=ज्ञानी, **पश्यत्**=ज्ञानचक्षु से देखता है, **तस्मिन्**=उसी ब्रह्म ईश्वर में, **इदम् सर्वम्**=यह सब जगत्, **सम् एति**=प्रलय में संगत होता है, **च**=और, उत्पत्ति काल में पृथक् स्थूल रूप में विस्तृत, **च**=भी होता है, **सः**=वह ब्रह्म ईश्वर, **विभूः**=व्यापक है, प्रजासु=समस्त जड़, चेतन में, **ओतः च प्रोतः**=वस्त्र के खड़े आड़े सूतों की भाँति ओत है और प्रोत है।

तात्पर्य स्पष्ट है कि परमात्मा, ब्रह्म, ईश्वर जगत् के **जड़** चेतन पदार्थों में व्यापक है, वस्त्र के सूत के सदृश सर्वत्र ओतप्रोत है। उसके ओतप्रोत होने से सम्पूर्ण जगत् एक नीड है, एक आश्रय वाला है।

वेदों की सार उपनिषदों में ईश्वर की व्यापकता के अनेक स्रोत विद्यमान हैं। **श्वेताश्वेतर** उपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापी नाम से निर्दिष्ट कर परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान को परमब्रह्म उपनिषद् कहा है। वचन है–

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम्।

आत्मविद्यातपोमूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्परं तद्ब्रह्मोपनिषत्परमिति।। श्वेता. उप. 1/16

अर्थात् **क्षीरे**=दूध में, **सर्पिः इव**=घृत के सदृश, **अर्पितम्**=व्याप्त, **सर्वव्यापिनम्**=चराचर में व्याप्त, **आत्मानम्**=ब्रह्म, ईश्वर का, **आत्मविद्या**=आत्मज्ञान द्वारा, **तपः**=तप द्वारा, **मूलम्**=मूल स्वरूप ज्ञात होता है अथवा परमात्मा का ज्ञान आत्मविद्या एवं तप, **मूलम्**=आधार वाला तत्=उस, **ब्रह्म उपनिषद्**=ब्रह्म का ज्ञान, उपासना ही, **परम्**=श्रेष्ठ है, अन्तिम स्थिति है, तद् ब्रह्म उपनिषत् परम=वह ही परम ब्रह्म ज्ञान है।

वचन का तात्पर्य है सर्वव्यापी ब्रह्म दूध में घृत की भाँति सर्वत्र समाया हुआ है। उसकी प्राप्ति का मूल आधार आत्मविद्या एवं तप हैं। वह ब्रह्म ईश्वर उपनिषद् का परम रहस्य स्वरूप ज्ञान है।

मुण्डकोपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापक निर्दिष्ट करते हुए कहा–

नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।। मुण्ड. उप. 1/6।।

अर्थात् **नित्यम्**=सनातन, अजर, अमर, **विभुम्**=व्यापक, **सर्वगतम्**=सर्वत्र पहुँचा हुआ, **सुसूक्ष्मम्**=सूक्ष्मातिसूक्ष्म, **तत्**=वह ब्रह्म, **अव्ययम्**=अविनाशी, **यद् भूतयोनिम्**=जो चराचर भूतों का निमित्त कारण व आश्रय है, उसे, **धीराः**=ज्ञानी, ध्यानी, **परि पश्यन्ति**=देखते हैं, उसका साक्षात्कार करते हैं।

वचन का भाव है, ब्रह्म नित्य, व्यापक सब पदार्थों को प्राप्त, सूक्ष्म, अविनाशी है। उसमें ही सब भूत=उत्पन्न होने वाले पदार्थ रहते हैं। परा विद्या वाले ज्ञानी उसका साक्षात्कार करने में समर्थ होते हैं।

शिवपुराण[1] आदि अन्य ग्रन्थों में भी ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है। उदाहरणरूप वेद एवं उपनिषद् के इन प्रमाणों से सुस्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा ईश्वर सर्वव्यापक है। उसके सर्वव्यापक होने पर ईश्वर को कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं, वह तो सर्वव्यापक होने से स्वतः ही सर्वगत है, सर्वत्र ही पहुँचा हुआ है। वह मन के समान क्या? मन से भी तीव्र गति वाला है। ईश्वर की मन से भी शीघ्र गति का निर्देश करते हुए वेद में कहा है–

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्षत्। यजु. 40/4

अर्थात् **एकम्**=अद्वितीय ईश्वर, **अनेजत्**=गति नहीं करता, वह अचल है, परन्तु **मनसः**=मन के वेग से भी, **जवीयः**=अति वेगवान् है। और वह, **पूर्वम् अर्षत्**=पहले से ही सबसे आगे जहाँ कोई चलकर जाए, वहाँ व्याप्त हुआ होता है। **देवाः**=चक्षुः आदि इन्द्रियों, **एनत्**=इस देव ईश्वर को, **न आप्नुवन्**=प्राप्त नहीं करती।

1. सर्वावकाशदं सर्वव्यापकं गगनात्मकम्। ईशानाख्यं महेशस्य रूपं दिवि विसर्पति।

शिवपु. शतक. 9–90, पृ. 374 ।।

महादेवस्य तद्रूपं महादेवस्य चाहवयम्। तथा विश्वस्य सम्प्रीत्या प्रीतो भवति शंकर।।

शिवपु. शतक. 99–94, पृ. 374 ।।

तात्पर्य हुआ, ईश्वर सर्वव्यापक है, मन की गति से भी तीव्र गति वाला है, अचल है, अवतार एवं आने जाने की विधियों से रहित है। सम्पूर्ण जगत् में ठसाठस भरा है। उससे जगत् के तीनों लोकों का कण कण व्याप्त है। व्याप्त होकर के सृष्टि का पालन, धारण, उत्पादन कर रहा है। सुख समृद्धि के साधनों को दे रहा है। ईश्वर यदि सर्वव्यापक न होता, तो वह सृष्टि के समस्त पदार्थों का अधिष्ठाता, आधार, क्रिया कर्म का साक्षी कैसे होता! एवं कर्मफल का दाता और न्यायकारी कैसे बनता! सुखों के साधनों को किस प्रकार देता! अतः सिद्ध है वह सर्वव्यापक है।

इस विशाल सृष्टि की जितनी भी धन धान्य, सेना चाँदी, समृद्धि सम्पत्ति आदि की सम्प्रदायें हैं, उनका आधार निराकार, सर्वव्यापक शिव=सुख का कारण, शंकर=सुखकारक ब्रह्म ईश्वर ही तो है। सम्पदा का क्षेत्र भी छोटा नहीं है, अति विस्तृत है। पृथिवी को देखते ही सरस, नीरस, नाना प्रकारक, अननुमानित

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

उत्कृष्ट शंका समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका–चिंतन क्या है और यह कैसे किया जाता है? उसके लिये क्या–क्या चीजें आवश्यक है?

समाधान–चिंतन का मतलब होता है किसी बात की गहराई में जाना। उसको कई प्रकार से सोचना। जैसे मान लीजिये, आपने प्रवचन में सुना अथवा किसी पुस्तक से पढ़ा कि–ईश्वर कितने हैं? एक है। सभी लोग कहते हैं। आप बातचीत में किसी से भी पूछो, कि भगवान एक हैं या अनेक? तो क्या उत्तर देगा–एक। फिर दूसरा सवाल पूछो वो एक भगवान एक जगह रहता है, या सब जगह। सब जगह? सभी लोग यही कहेंगे–सब जगह। जब दो बात तो उन्होंने ठीक बोल दी, भगवान एक है और वह सब जगह रहता है। और जब तीसरा सवाल पूछेंगे, तो झगड़ा शुरू हो जायेगा। तीसरा सवाल यह है कि जो वस्तु सब जगह रहती है, क्या उसकी शक्ल होनी चाहिये या नहीं होनी चाहिये? नहीं होनी चाहिये। अब पूछो, आपके घर में शक्ल वाला भगवान रखा है या नहीं रखा है? रखा है। बस यही गड़बड़ है। जब ऐसी गड़बड़ सामने आये, तब चिन्तन की जरूरत है, तब सोचने कर जरूरत है। इसकी गहराई में उतरो, अगर भगवान शक्ल वाला है तो वह जगह नहीं रह सकता। और अगर वह सब जगह रहता है, तो शक्ल वाला नहीं हो सकता। ऐसे बैठ करके विचार करना।

दो पक्ष बनाकर के तर्क–वितर्क उठाना। फिर प्रश्न उठाना, फिर उसका उत्तर ढूँढ़ना, फिर प्रश्न उठाना, फिर उत्तर ढूँढ़ना। इसका नाम है "चिन्तन"। इस चिन्तन के लिये पहली चीज है, अच्छी प्रकार ध्यान से प्रवचन सुनना। किसी वक्ता का प्रवचन पूरे ध्यान से सुनना। मन लगाकर सुनना, कि उसने क्या बोला। क्या–क्या शब्द बोले? क्या कहना चहता है? उसके अभिप्राय को ठीक से समझना, पहली बात। और दूसरी बात–उसको थोड़ा दोहराना (रिवाइज) करना। सोचना, उसने क्या बोला था। उसके वचनों का अर्थ क्या था? और फिर तीसरी बात, ऐसे पक्ष–विपक्ष बनाकर के प्रश्न–उत्तर करना, और उस बात की गहराई में उतरना। और अंत में एक निर्णय पर पहुँचना। सारे प्रश्न–उत्तर करके अंत में सार क्या निकला। ईश्वर को शक्ल वाला मानें या नहीं। अगर वो एक है, यह हमने स्वीकार कर लिया और यह भी स्वीकार कर लिया, कि वो सब जगह रहता है तो फिर तीसरी बात अपने आप साफ है, जो चीज सब जगह रहती है, उसकी कोई शक्ल नहीं हो सकती। या तो कोई प्रमाण लाओ, कि अमुक वस्तु सब जगह रहती है, और उसकी शक्ल भी है। यदि कोई ऐसी वस्तु मिल जाये, कि वो सब जगह रहती है और उसकी भी फोटो (शक्ल) है। तब तो हम ईश्वर की फोटो (शक्ल) मान लेंगे। वो भी सब जगह रहता है, उसकी भी फोटो शक्ल है। यदि आप ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं ढूँढ़ पाये, कोई उदाहरण नहीं ढूँढ़ पाये, कि कोई वस्तु सब जगह है और शक्ल भी है। यदि नहीं ढूँढ़ पाये, तो इसका मतलब साफ है, कि ईश्वर सब जगह रहता है, इसलिए उसकी कोई शक्ल आकृति नहीं है। तो फिर उसको स्वीकार करो। आज के बाद शक्ल नहीं हो सकती। इसका नाम है–'चिन्तन'। इस तरह से करना चाहिये। और जो अंत में सार निकले उसको स्वीकार करना चहिये। जब यह प्रमाण से सिद्ध हो गया कि ईश्वर सब जगह रहता है, और उसकी कोई शक्ल वाले की, फोटो वाले की पूजा नहीं करना। वो तो महापुरुषों की फोटो है। रखो घर में, कोई आपत्ति थोड़े ही है। फोटो रखना कोई बुरी बात थोड़े ही हैं। देखो हमने कितनी फोटो लगा रखी है यहाँ पर। अपने महापुरुषों की, दादा–परदादा की, बड़े–बुजुर्गों की फोटो लगानी चाहिये। देश के वीर पुरुषों की, महारानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस ऐसे–ऐसे वीर पुरुषों की फोटो लगानी चाहियें। अच्छे–अच्छे संत महात्मा, महर्षि दयानंद, महर्षि कणाद, महर्षि गौतम, महर्षि कपिल ऐसे–ऐसे साधु, संतों, ऋषियों के फोटो लगाने चाहिये। फोटो लगाने में कोई आपत्ति नहीं है। उनकी पूजा नहीं करनी, उन की आरती नहीं करनी, उनको खिलाना–पिलाना नहीं है। यह गड़बड़ है। बोलो, अग्नि सब जगह रहती है न। जब वो सब जगह रहती है तो उसकी आकार, आकृति कौन सी है। जो अग्नि लपटों के रूप में दिख रही है। वो सब जगह नहीं रहती। और जो सब जगह रहती है, वो दिखती नहीं। बताइये, आकार कहाँ हुआ? इसलिये दोनों में अंतर है। यह है चिन्तन का स्वरूप।

शंका–श्रेष्ठ पुरुषों की संकट से ईश्वर तत्काल रक्षा करता है, या कुछ और है?

समाधान–ईश्वर श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा तत्काल करता है। पर वो अंदर से उत्साह देकर, अंदर से कुछ सूझबूझ देकर, ज्ञान–विज्ञान देकर। ऐसे कोई दुष्ट व्यक्ति, श्रेष्ठ व्यक्ति पर हथियार उठाये, तलवार उठाये और ईश्वर यहाँ बीच में ढाल अड़ा दे, ईश्वर ऐसा नहीं करता। ऐसी प्रेरणा से ईश्वर सबकी यथायोग्य रक्षा करता है। श्रेष्ठों की भी अन्यों की भी।

दर्शन योग महाविद्यालय
रोजड़ (गुजरात)

☞ पृष्ठ 04 का शेष

शिवभक्त चेते! क्या ...

सम्पदा का आगार दिखता है, अन्तरिक्ष पर दृष्टि डालते ही वायु, विद्युत् एवं उत्पत्ति के आधार जल आदि का बृहत् भण्डार दृष्टिगोचर होता है, द्यौलोक में दृष्टि पड़ते ही प्रकाश, दीप्ति के हेतु जाज्वल्यमान चाँद, सितारे, सूर्य, चन्द्र आदि बड़े–बड़े प्रकाशपुञ्ज दीख पड़ते हैं।

सर्वव्यापक ईश्वर प्रदत्त इस सम्पदा से पहाड़ों को चीरकर लोग पति, धनिपति बन रहे हैं, वृक्षों को कांट बेचकर नगरपति हो रहे हैं, जलों को बेचकर बड़े लखपति स्वामी कहे जा रहे हैं, फलों का लेन देन कर कोठीपति सिद्ध हो रहे हैं, लोहा, कोयला आदि को प्राप्त कर करोड़ पति बन रहे हैं, तेलों की खदानों से अरबपति, खरबपति बनते जा रहे हैं। **यह सब निराकार शिव, शंकर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् अजर, अमर, ईश्वर की सम्पदा का ही कमाल है।**

सर्वव्यापक शिव ईश्वर द्वारा दी गई सम्पूर्ण सम्पदा सर्वजनीन है, सबके लिए है। किसी एक व्यक्ति, क्षेत्र, ग्राम, प्रान्त, प्रदेश, देश के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए यह सम्पदा है।

सम्पदाओं के स्वामी ओमभिधान शिव, शंकर ईश्वर की इस वरिमा, महिमा, उदारता, दयालुता को देख भक्ति–भावों से नित्य सभी का मस्तक नत है। उन भक्ति–भावों को व्यक्त करते हुए कोई भी थकता नहीं। उन भक्ति–भावों का सूचक मन्त्र है–

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। (यजु. 16/41

यजुर्वेद के इस मन्त्र में **3 बार नमः** शब्द आया है। नमः शब्द 2 प्रकार के हैं। जो **णम प्रह्वत्वे शब्दे च** धातु से **असुन्** एवं **अच्** प्रत्ययों द्वारा हलन्त, अजन्त क्रमशः **नमस्**, नमः शब्द रूप सिद्ध होते हैं। जिनके **नमस्कार, सत्कार, (नमस्यति परिचरणकर्मा**, निघ. 3/5) वज, अन्न (**नमः इति अन्न नाम**, निघ. 2/7, **नमः इति वज्र नाम**, निघ. 2/20), **संगति, स्तुति (यज्ञो वै नमः**, शत.ब्रा. 2/4/2/24) आदि अर्थ हैं। जिनका प्रकरणानुसार सम्बन्ध होता है। यहाँ प्रकृत मन्त्र में प्रसंगतः नमः शब्द के **स्तुति अर्थ की संगति होगी।**

इस यजुः मन्त्र में स्तुति के अधिकारी ईश्वर के लिए चतुर्थी विभक्त्यन्त **शम्भवाय, मयोभवाय, शंकराय, मयस्कराय, शिवाय, शिवतराय** ये 6 पद आये हैं। इन 6 पदों के माध्यम से उपासक द्वारा सुख, कल्याण के निमित्त उपास्य ईश्वर के प्रति हृदय के गम्भीर भाव अभिव्यक्त हैं।

मन्त्र में आये ये चतुर्थ्यन्त पद शम्, मयस्, शिव इन शब्दों से निष्पन्न हुए हैं। ये तीनों शब्द शम् इति सुख नाम, निघ. 3/6, **मयः इति सुख नाम**, निघ. 3/6, **शिवम् इति सुख नाम**, निघ. 3/6, सुख के वाचक हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन 3 भेदों से सुख भी 3 प्रकार का है। शम् शब्द वाच्य सुख **आध्यात्मिक=मोक्ष** का सुख है, **मयस्** शब्द वाच्य सुख **आधिदैविक=देव, इन्द्रिय** अर्थात् **मन, प्राण, 10 इन्द्रियों** एवं **आत्मा** का सुख है। **शिव** शब्द वाच्य सुख **आधिभौतिक=सांसारिक, धन धान्य**, रुपया पैसा, सगे सम्बन्धी आदि का सुख है।

शम् तथा **मयस्** उपपद रहते अन्तर्भावितण्यर्थ में **भू सत्तायाम्** धातु से **अच्** प्रत्यय द्वारा **शम्भव, मयोभव** शब्द सिद्ध होते हैं। जिनका चतुर्थी में **शम्भवाय, मयोभवाय** रूप बनता है। जिनका अर्थ होता है **आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख उत्पन्न न करने वाले के लिए।**

शम् तथा मयस् उपपद रहते **डुकृञ् करणे** धातु से **अच्** प्रत्यय द्वारा **शंकर, मयस्कर** शब्द निष्पन्न होते हैं। जिनका चतुर्थी में **शंकराय, मयस्कराय** प्रयोगरूप बनता है। जिनका अर्थ है **आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख करने वाले के लिए।**

इसी प्रकार **शिव** शब्द से अतिशय अर्थ में **तरप्** प्रत्यय करके **शिवतर** शब्द बनता है, पुनः चतुर्थी में **शिवतराय** प्रयोगरूप बना है। जिसका अर्थ है **आधिभौतिक=सांसारिक सुख के अतिशय कारण के लिए।** प्रकृति, सभी का कल्याण, सुख करती है अतः **शिव** है। ईश्वर भी सबका कल्याण, सुख करता है, किन्तु प्रकृति से अतिशय रूप में करता है, अतः वह **शिवतर** है।

इस प्रकार **नमः शम्भवाय** इस मन्त्र का अर्थ हुआ–

हे ईश्वर! आप **शम्भवाय=शम्**–आध्यात्मिक, मोक्ष सुख

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

आखिर कब तक भारत कटता तथा अपमानित होता रहेगा

● आचार्य आर्य नरेश

वैदिक गवेषक अंग्रेजों द्वारा मुस्लिम लीग की स्थापना से मुसलमान लीडरों को भड़काकर पृथक् देश की मांग की और हमारे सैकुलर लीडरों ने तुरन्त गद्दी पाने की चाह में देश को कटवा दिया। इन्साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका व कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया। मुस्लिम वोट मिलता रहे इसलिए सरकार ने आर्य भारतीय राजाओं द्वारा बनाये गए लाल किला, ताजमहल व दिल्ली में ही महरोली स्थित कुतुब मीनार नाम से जानी जाने वाली 'लाट' सहित देश की अनेक प्राचीन घरोहरें जो आर्य–हिन्दू राजपूत शासकों ने बनवाई थीं मुगलों द्वारा निर्मित बताई जा रही हैं। भारतीय विशिष्ट भवनों को अपने द्वारा बनाया हुआ घोषित कर के वासना व क्रूरता में डूबे मुगल शासक संसार में अपने आप को महान् सिद्ध करना चाहते थे। सच्चाई तो यह है कि मुगलों ने भारत पर हमले, कत्ले–आम, देवालयों को तोड़कर व लूटकर न तो कोई भवन बनाया न किला न मीनार यदि बनाये तो केवल वेश्यावृत्ति करने एवं भारतीय ललनाओं का जीवन बर्बाद करने वाले हरम व मन्दिरों को तोड़कर आतंकवाद की प्रेरणा देने वाली मस्जिदें प्रमाण हेतु आगरे का लाल किला जिसका वास्तविक नाम बादलगढ़ है में लगे भारत सरकार के एक नीले बोर्ड को देखिए। वहां आज भी लिखा मिलता है कि अकबर के इस तहखाने में बने 'हरम' में पांच हजार नारियां बंधक बना कर रखी जाती थी। यह बोर्ड अभी सुरक्षित है। लगता है कि मु–वोट लोभी, देशद्रोही नेताओं और उनके सहयोगियों का अभी उधर ध्यान नहीं गया।

महर्षि दयानन्द कहते हैं कि भारत का नेता भारत की मिट्टी तथा संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए। हम ने अर्थात् देश की जनता ने तथाकथित स्वतन्त्रता के पश्चात् भी यही भूल की कि अपने देश के नेता इंग्लैंड एवं अरब की धरती वाले रखे। उसका यह परिणाम निकला कि उन्होंने सारा आर्यों का गरिमामय इतिहास समाप्त करवा दिया और मुगलों के क्रूरतापूर्ण इतिहास पर पर्दा डालकर यह कहा कि (हजारों हिन्दुओं का हत्यारा) अकबर महान् था तथा लाखों का कतिल नीच औरंगजेब जिसने मथुरा में कृष्णजन्म मन्दिर को तोड़ मस्जिद बनाई थी वह ईश्वर का महान् बन्दा था व राम मन्दिर सहित अनेक मन्दिरों का भंजक, अरबों रुपयों का लुटेरा, लाखों का कातिल, अनगिनित आर्यखालसाहिन्दू महिलाओं का दूषक, जिसने आर्य हिन्दू–जनों की गर्दनें काट कर मीनारें बनाई थीं वह भारतीय संस्कृति को बढ़ाने वाला था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु बच्चों के पाठयक्रम का पूरा इतिहास बदल दिया गया व मुगलों को अपने कुकर्मों से अपमानित होने से बचाने हेतु तथा वोट पाने हेतु बंगाल सहित लगभग सभी प्रान्तों के शिक्षा विभागों को सूचना दी कि किसी भी कक्षा की पुस्तक में मुगलों के हमलों, लूटों, बलात्कारों, मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवाने अथवा बलात् मुसलमान बनाने की कोई चर्चा न होनी चाहिए। इस आदेश का कठोरता से पालन किया जाए। जिस देश की प्रधानमन्त्री इंन्दिरा बाबर की कबर की पूजा करे उसकी कांग्रेस सरकार क्यों न मुगलों का पक्ष धरे? भारत का सच्चा इतिहास जानने हेतु पं. भगवत दत्त व पी. एन. ओक लिखित पुस्तकें पढ़ें।

सच्चा इतिहास यह है कि लालकिला जिसका प्राचीन नाम लालकोट था वह पृथ्वीराज का महल था। यह शाहजहां ने बिलकुल नहीं बनवाया अपितु उससे 800 वर्ष पहले भी था व इसे महाराजा अनंगपाल जी ने बनवाया था। भारतीयों द्वारा बनाये गए भवनों की कुछ विशेष निशानियां हैं। जैसे मूर्तियाँ अष्टकोणीय –रचना, बड़े–बड़े पत्थरों को जोड़ने हेतु लोहे की पट्टियाँ, कमल के फूल, त्रिशूल व हाथियों के चित्र। ये सभी लालकिला, तेजोमहल व महरोली–लाट (कुतुबमीनार) आदि में मिलते हैं। यदि लाल किला शाहजहां ने बनवाया होता तो उसका यमुना तट 'राजघाट' न कहलाकर 'बादशाहघाट' आदि कहलाता। महरोली–लाट (कुतुब–क्षेत्र) में महाराजा विक्रमादित्य का वैदिक ज्योतिषी श्री आर्यमिहिर अपने गणितज्ञों सहित वास करता था। यह उनकी नक्षत्र विद्याध्ययन हेतु वेध–स्तम्भ व वेध शाला थी। यह विक्रमादित्य वही थे जिसका अरब पर भी राज था और उसका विजयशीला लेख मक्का के मन्दिर में लगा था। तेजोमहल जिसका वास्तविक नाम 'तेजोजी' था इसको महाराजा परमदेव ने 1155 में बनवाया था। मुल्ला अब्दुल हमीद लाहोरी अपनी पुस्तक "बादशाहनामा" के प्रथम भाग पृष्ठ 403 पर लिखता है कि 'यह राजा मानसिंह का था और एक देवालय था इसे राजा मानसिंह के पोते राजा जय सिंह से लिया गया"। दरगाह निजामुद्दीन, हुमायूँ का मकबरा, संफदरजंग–मकबरा, शेर मण्डल जो पुराने किलों में है, किला तुगलकाबाद (दिल्ली), फिरोजशाह कोटला, लोधी मकबरा, रोशन आरा मकबरा आदि भवन सेभी हिन्दू राजा द्वारा बनवाये गये थे। अय्याश, कातिल, नशेबाज मुगलों ने केवल कुछ पत्थरों को बदल कर ताजमहल की तरह अरबी भाषा डाल दी, या तोड़–फोड़ कर के असलियत को छिपाने का प्रयास किया। मुस्लिम वोट के मोह में एवं गोरों की हिन्दुओं को दबाने की चाल से महान् हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के अजमेर किले को लुटेरे गोरी के साथी की दरगाह बना दी। देश के बच्चों को पथ भ्रष्ट करने हेतु पुरानी नेहरू–गांधी नीति के कारण आर्यावर्त–भारत के प्राचीन गरिमामय इतिहास को न पढ़ा कर उस के स्थान पर गोरों व मुगलों के गीत गाये जा रहे हैं एवं हिन्दुओं के कत्लेआम पर नाच–नाच कर गाने वाले अमीर खुसरो की प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं–पढ़ें बदायुनी लिखित खिलजी का इतिहास प्रमाण है। इसमें लोश मात्र संशय नहीं कि भारत में बने हुए सभी किले, महल व मीनारें आर्य हिन्दूओं द्वारा ही बनाए गए थे जिन्हें मुगलकाल में हमलावरों ने तोड़–फोड़ कर मस्जिदों का रूप दे दिया। इन प्राचीन भवनों को मुसलमानी सिद्ध करने हेतु उन पर बने कमल, शंख, हाथी व मूर्तियों को तोड़ दिया गया। परन्तु फिर भी कहीं–कहीं छूट जाने से वे अपनी असलियत तथा मुगलों एवं उनके सहयोगियों की चोरी को प्रकट कर रहे हैं। 1952 में पुरातत्त्व–विभाग के एक कर्मचारी श्री ई.आर. साठे ने ताजमहल की एक दीवार में पड़ी दरार को ठीक करने का कार्य प्रारम्भ किया। जब मिस्त्रियों द्वारा दीवार में ईंटें लगाई जा रहीं थी तो वहाँ से देवियों को मूर्तियां मिलीं। यह बात विदेशी कांग्रेसी नेहरू सरकार तक पहुँची। उस समय के मुगल प्रेमी शिक्षामन्त्री मौलाना आजाद और प्रधान मन्त्री नेहरू के आदेश से दोनों दीवारें बन्द कर दी गईं व मूर्तियां भी। सत्य को छिपाने हेतु लाल किले की हिन्दू कलाकृतियां भी पृथक बंद है। नेहरू जी बड़ी जिन्दादिली से कहते थे कि मैं रहनसहन व खानपान से मुस्लिम हूँ। देखें आत्मकथा नेहरू मुस्लिम नाम का एकमात्र महान् देशभक्त नेता व जज श्री मियों एम.के. छागला कहते थे कि सरकार आरक्षण से देश को न बाँटे, अलिगढ़ विश्वविद्यालय को मात्र मुस्लिम विश्वविद्यालय कहकर लोगों में दरार न डालें एवं देश की एकता हेतु उर्दू को देवनागरी लिपि में ही लिखवायें। जैसे कि चीन व टर्की आदि देशों में चलता है। सत्य कहने वाले उस 'मुसल'–ईमान को मक्खन से बाल की तरह कॉंग्रेस ने दूर फेंक दिया। सत्य यह है कि देश सच्चे–इतिहास, देशभक्त लोगों के चरित्र, पक्षपातरहित नीति एक समान लिपि व भाषा, एक समान कानून साहिता से संगठित तथा उत्पन्न होता है एवं वर्त्तमान की नीतियों से खण्डित व आतंकित हो रहा है।

कभी कश्मीर आर्य हिन्दू बाहुल्य देश था। यहां पर बोले जाने वाली कश्मीरी भाषा जिसमें बहुत से शब्द संस्कृत के हैं वह देवनागरी लिपि में लिखी जाती थी। तब यह धरती का स्वर्ग कहलाता था। संस्कृत संस्कृति शास्त्र तथा गोरक्षा से यह पूज्य–धरा से महिमा मण्डित था। यहां का राजा भी राजसूय यज्ञ में याधिष्ठिर द्वारा आमन्त्रित था (देखे महाभारत) कश्मीर वस्तुतः कश्यपऋषि द्वारा संस्थापित अत्यन्त धार्मिक व भाईचारे की पुण्य भूमि थी, पहले उसे 1392 से 1420 तक सिकंदर सुहा ने लूटा व कत्ल किया फिर नेहरू लाल के 370 ने इसे गोहत्यारों का बूचड़ खाना बना दिया। आधा कश्मीर पहले ही इस नेता की भूल व माऊंट बेटन–नेहरू प्रेम से चला गया। शेष बचे से भी लगभग पाँच लाख हिन्दुओं को सम्पदा व सुन्दर कन्याओं को छीन कर पुरानी मुगली तलवार नीति से भगा दिया गया। लगभग सभी संस्कृत व हिन्दी के नाम बदल दिए गए। आज वहां लगभग 90 से 95 प्रतिशत गोभक्षकों का वास है, जो कुरान के अनुसार हिन्दुओं को काफिर समझते हैं एवं उन्हें भी मुसलमान बनाकर व काटकर या भगाकर अपना राज चाहते हैं (देखें कुरान सूरा 8 आयत 12 सूरा 9 गायत 5)। पाकिस्तान कहता है कि कश्मीर में दंगे होते हैं, वे आजादी चाहते हैं। हम कहते हैं कि बलोचिस्तानी पाक से अलग होने की आजादी चाहता है क्या वह उसे अलग कर देगा? यही स्थिति चीन के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र की है। पाक लगभग प्रतिदिन सीमापार गोलाबारी करता है कभी कार्गिल घुसपैठ। हजारों आर्यवीर सैनिक मार दिए जाते हैं। बार बार कर्फ्यू लगता है, सरकारी सम्पत्ति जलाई जाती है क्योंकि उनका कुछ जाता नहीं, केवल एक ही मांग है कि कश्मीर से मिलिट्री निकालो, इसे इस्लामिस्तान हेतु मुसलमानों के हवाले करो। हुर्रियत लीडर गिलानी की खुली मांग है कि "हमारा संविधान 'कुरान' है। अमरनाथ यात्रा या पर्वतीय–यात्रा बंद करो। हिन्दुओं को यहां जमीन मत दो, कैम्प लगाएं तो दस हजार रुपये लो। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है क्योंकि देश का नेता वोट–गद्दी का भूखा है, अन्यायकारी गोहत्यारों आतंकवादियों के समक्ष झुकता चला जा रहा है। अपनी संस्कृति मिटा रहा है, उन के आतंकी राज्य को प्रेरणा दे रहा है। पार्टी व वोट नहीं देश बड़ा है। यह बात नेताओं और जनता को शीघ्र समझनी होगी व नेताओं को तुष्टिकरण से रोकना होगा। अन्यथा पाकिस्तान की तरह कश्मीर भी चला जाएगा। कश्मीरियों को मुफ्त जैसा राशन मिलने पर भी वे देश भक्त नहीं बने क्योंकि सैकुलर अर्धमुस्लिम नेहरू गाँधी सरकार ने उन्हें भारतीय संस्कृति का पाठ न पढ़ा कर लुटेरे मुगलों के महान् होने का पाठ पढ़ाया।

उद्‌गीथ हिमाचल प्रदेश

देवार्थः

●पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री

देव' शब्द विभिन्न धातुओं से सिद्ध होकर भिन्न-भिन्न अर्थों में विषय एवं प्रकरणानुसार प्रयुक्त होता है। यथा-

1. 'डु दाञ् दाने' धातु से अच् प्रत्यय करने पर बनता है ददातीति देवः।
2. 'दीपी दीप्तौ' धातु से अच् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है दीप्यते प्रज्वलतीति देवः। प्रज्वलनशील भौतिकाग्नि।
3. 'द्युत दीप्तौ' धातु से अच् प्रत्यय करके देव शब्द बनता है। द्योतते प्रकाशते इति देवः। देवः प्रकाशमानः परमेश्वरः।
4. दिव् शब्द से तद्धित अण्-प्रत्यय करने पर 'देव' बनता है। दिवः इमे इति देवाः। दिव्+अण्। देव+अ=देवः। द्युलोक में रहने वाले पदार्थ। (देवाः) चन्द्रादयो दिव्याः पदार्थाः इव विद्वांसः।
5. दिवु-क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहार-द्युति-स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु धातु से अच् प्रत्यय करने पर देव शब्द बनता है।

दीव्यतीति देवः। दीव्यते इति देवः।

ऋग्वेद महाभाष्यम् पृष्ठ 247

सम्पादित-आचार्य विश्वश्रवा व्यास

उपर्युक्त धात्वर्थ लौकिक व्यवहार और परमार्थ दोनों में घटते हैं।

देव और देवता शब्द एकार्थवाची हैं-

देवता-यो देवः सा देवता, इस अर्थ में-

देव+तल्-> टाप् से देवता शब्द सिद्ध होता है। अष्टा. 5/4/27

निरुक्ति के आधार पर देव शब्द देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्योतनाद् वा द्युस्थानो अवतीति वा।। निरुक्त 7/15

1. देवो दानत् वा-यत्-स्व स्वत्वनिवृत्तिपूर्वकं परस्वत्वोत्पादनं तद् दानं भवति।

किसी वस्तु के विषय में अपने स्वामित्व को छोड़ते हुए दूसरे के स्वामित्व को उत्पन्न करने को 'दान' कहते हैं। अतः दान करने वाला 'देव' है।

2. दीपनाद् वा-दीपनं प्रकाशनम्-प्रकाश करना। दीपनाद्-सूर्यादयः देवाः।

सब मूर्तिमान-द्रव्यों का प्रकाश करने से सूर्यादि लोकों का नो 'देव है।

द्योतनाद् वा -द्योतनं उपदेशादिकं च। सत्योपदेश करना।

द्योतनाद् मातृ-पितृ-आचार्यातिथयश्च।

माता, पिता, आचार्य और अतिथि भी पालन, विद्या और सत्योपदेश करने से 'देव' कहाते हैं।

4. द्युस्थानो भवतीति वा-प्रकाशकानामपि प्रकाशकत्वात् परमेश्वरः एव देवोऽस्तीति विज्ञेयम्।।

सूर्यादि लोकों का भी जो प्रकाश करने वाला है, वही ईश्वर हमारा उपास्य देव है, अन्य नहीं।

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदविषय) इसके अतिरिक्त अन्य अर्थों में भी 'देव' शब्द प्रयुक्त हुआ है-

विद्वांसो हि देवाः।। शतपथ 3/5/6/10

जो विद्वान् हैं, उन्हीं को देव कहते हैं।

सत्यं वै देवाः अनृतं मनुष्याः।। शतपथ 1/1/1/4

जिन्हें ऋत सिद्ध हो गया है, जो अपरिवर्तित नियमों के ज्ञाता ही नहीं-उन पर आचरण भी करते हैं, वे सत्यमय व्यक्ति 'देव' हैं। जो ऋत नियमों के पालन करने में भूल कर जाते हैं, अनृत आचरण कर बैठते हैं, वे मनुष्य हैं। जो नापतोल कर चलते हैं, वे देव और जो नापतोल कर नहीं चल पाते, वे मनुष्य हैं।

क्वचिद् देव देवत्यकर्म, मातृदेवत्यं, विद्व द्देवत्यं, अतिथिदेवत्यं, पितृदेवत्यं चैतेऽपि पूज्याः सत्कर्त्तव्याः सन्त्यतस्तेषामुपकार कर्तृत्वमात्रमेव देवतात्वमस्तीति विज्ञायते।।

कहीं यज्ञादि कर्म, कहीं माता, कहीं पिता, कहीं विद्वान्, कहीं अतिथि और कहीं आचार्य देव कहाते हैं। ऋग्वेदादि भा.भू., वेदविषय

मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव अतिथिदेवो भव।। तै.आ.प्रपा.7 अनु.11

माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देव मानकर उनका आदर-सत्कार करो।

देवता विषय में दो प्रकार का भेद है-

1. मूर्तिमान्- जैसे-माता, पिता, आचार्य, अतिथि। ये चार मूर्तिमान् देवता हैं।
2. अमूर्तिमान्- परब्रह्म अमूर्तिमान् है अर्थात् उसकी किसी प्रकार की मूर्ति नहीं है।

अग्नि आदि पदार्थों में जितना-जितना अर्थ का प्रकाश, दिव्यगुण, क्रियासिद्धि और उपकार लेने का सम्भव है, उतना-उतना उनमें देवपन मानने से कुछ भी हानि नहीं हो सकती। क्योंकि वेदों में जहां-जहां उपाना का व्यवहार किया जाता है, वहां-वहां एक अद्वितीय परमेश्वर का ही ग्रहण किया है।

निरुक्त का प्रमाण है-व्यवहार के (उपयोगी) देवताओं की उपासना कभी नहीं करनी चाहिए, किन्तु एक परमेश्वर की ही करनी उचित है।

प्रश्न-व्यवहार के देवता कौन से हैं?

उत्तर- 1. ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासः।। ऋ. 8/28/1

2. त्रयस्त्रिंशतास्तुवत।। यजु. 14/31

3. यस्य त्रयत्रिंशद् देवाः।। अथर्व. 10/7/23

व्यवहार के ये 33 देवता हैं-

1. आठ वसु-अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौः, चन्द्रमा और नक्षत्र। (आदित्य का अर्थ सूर्यलोक और उसका प्रकाश द्यौः कहाता है।) इनका वसु नाम इस कारण है कि सब पदार्थ इन्हीं में बसते हैं और ये ही सबके निवास स्थान हैं। इनमें से अग्नि, पृथिवी, आदित्य, चन्द्रमा और नक्षत्र ये पांच मूर्तिमान् और शेष अमूर्तिमान् हैं।
2. ग्यारह रुद्र-जो शरीर में दश प्राण हैं अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय। ग्यारहवां जीवात्मा है। क्योंकि जब वे शरीर से निकल जाते हैं तब मरण होने से उसके सम्बन्धी लोग रोते हैं। वे निकलते हुए उनको रुलाते हैं, इससे इनका नाम रुद्र है। ये ग्यारह मूर्तिरहित देव हैं।
3. बारह आदित्य-चैत्र से फाल्गुन तक बारह महीनों का नाम आदित्य है। क्योंकि वे सब जगत् के पदार्थों का आदान अर्थात् सबकी आयु को ग्रहण करते चले जाते हैं, इसी से इनका नाम आदित्य है। ये मूर्तिरहित देव हैं।
4. एक इन्द्र-इन्द्र नाम विद्युत् का है क्योंकि वह उत्तम ऐश्वर्य की विद्या का मुख्य हेतु है।
5. एक यज्ञ अर्थात् प्रजापति-यज्ञ को प्रजापति इसलिए कहते हैं कि उससे वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा प्रजा का पालन होता है।

ये सब मिल के अपने-अपने दिव्य गुणों से तेंतीस देव कहाते हैं।

उपर्युक्त देवों के अतिरिक्त अग्रलिखित ये भी देव हैं-

6. तीन देव-स्थान, नाम और जन्म को कहते हैं।
7. दो देव- अन्न और प्राण को कहते हैं।
8. एक अध्यर्ध देव-जिससे सबका धारण और वृद्धि होती है, जो सूत्रात्मा वायु सब जगत् में भर रहा है, उसको अध्यर्ध देव कहते हैं।

इनमें से कोई भी देव उपासना के योग्य नहीं है। किन्तु व्यवहार मात्र की सिद्धि के लिए ये सब देव हैं। सब मनुष्यों की उपसना के योग्य तो एक देव ब्रह्म ही है।

'देव' शब्द से इन्द्रियों का भी ग्रहण होता है-

नैनद् देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।। यजु. 40/4

इस वचन में 'देव' शब्द से इन्द्रियों का ग्रहण होता है जो कि श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका और मन ये छः देव कहाते हैं। क्योंकि शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सत्य और असत्य इत्यादि अर्थों का इनसे प्रकाश होता है।

पांच ज्ञानेन्द्रियां, विद्युत्- और विधियज्ञ ये सब देव मूर्तिमान् और अमूर्तिमान् भी हैं अर्थात् इन्द्रियों की शक्तिरूप द्रव्य अमूर्तिमान् और गोलक मूर्तिमान् हैं। विद्युत् और विधियज्ञ में जो-जो शब्द तथा ज्ञान है, वह अमूर्तिमान् और दर्शन तथा सामग्री मूर्तिमान् जानना चाहिए। (ऋग्वेदादि भा. भू., वेदविषय)

महर्षि दयानन्द कहते हैं-

जहां-जहां स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सर्वज्ञ, व्यापक, शुद्ध, सनातन, सृष्टिकर्ता आदि विशेषण लिखे हैं, वहीं-वहीं परमेश्वर का ग्रहण होता है। ...

और जहां-जहां उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जड़, दृश्य आदि विशेषण भी लिखे हों, वहां-वहां परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता। किन्तु जहां-जहां सर्वज्ञादि विशेषण हों, वहीं-वहीं परमात्मा और जहां-जहां इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हों, वहां-वहां जीव का ग्रहण होता है, ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर का जन्म-मरण कभी नहीं होता।... जन्मादि विशेषणों से जगत् के जड़ और जीवादि पदार्थों का ग्रहण करना उचित है, परमेश्वर का नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम समुल्लास) अग्रलिखित मन्त्र का भी आध्यात्मिक और भौतिक अर्थ जानना चाहिए-

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।। यजु 14/20

दीपक भी देवसंज्ञक है-महर्षि यास्क कहते हैं-

दीपनाद् वा। दीपनं प्रकाशनम्।

प्रकाशक होने से दीपक की देव संज्ञा है। दीपक में जहां प्रकाश है, ज्योति है वहां दीपक में तेज है, वर्चस् है। अन्धकारादि दोषों को हरण करने की सामर्थ्य है, ऊर्ध्वगमनशीलता है, दाहक शक्ति है।

ये सभी देवी गुण याज्ञिक जीवन में आने लगते हैं। एक दिन उसका अन्तरात्मा भी प्रकाशित हो जाता है क्योंकि दीपक को प्रज्वलित करते हुए वह प्रार्थना करता है-

घृतवर्तीसमायुक्तः वह्निना योजितः प्रभो।

यथा प्रकाशेन पूर्णो दीपः तथात्मानं मे कुरु।।

हे प्रभो! जैसे घी, बत्ती से युक्त, अग्नि से प्रदीप्त यह दीपक प्रकाश से परिपूर्ण हो रहा है, वैसे ही आप मेरे अन्तःकरण को ज्ञानाग्नि से आलोकित करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।।

यज्ञकर्ता भी सजग है, सचेत है, उसके भीतर भी प्रकाश है, ज्ञानज्योति जग रही है। श्रद्धा की अग्नि जल रही है। श्रद्धापूर्वक अग्नि प्रज्वलित कर रहा है-श्रद्धयाग्निः समिध्यते।।

4-ई, कैलाश नगर, फाजिलका, पंजाब

केवल बोध की ही नहीं क्रान्ति की भी थी वह शिवरात्रि

● श्रीमती मनीषा विमल

श्री कर्षन लाल तिवाड़ी के घर सन् 1825 को बहुत मन्नतों के बाद एक बालक का जन्म हुआ। बालक के चौदहवें वर्ष में प्रवेश करने पर पिता ने शिव चतुर्दशी का व्रत करने का आदेश दिया, क्योंकि पिता एक पक्के शिव भक्त थे। यद्यपि परिवार जनों की राय नहीं थी कि इस छोटी आयु में यह कठिन व्रत बालक से कराया जाय, किन्तु व्रत को लेकर बालक बहुत उत्साहित था। पिता द्वारा समझाया गया था कि रात चार पहर तक जागते हुये चार बार विधि–विधान से पूजा करने पर शिवजी स्वयं आकर दर्शन देंगे। शिव दर्शन की लालसा से बालक के उत्साही मन में सारे कष्ट सहने की शक्ति आ गई।

धीरे–धीरे रात गहराई और मन्दिर में बैठे सभी भक्त सोने लगे किन्तु वह चौदह वर्षीय बालक आँखों पर पानी के छीटें मार मार कर जागता रहा, विधि विधान से पूजा करता रहा। किन्तु यह क्या? जिस शिवलिंग को शिवदर्शन की लालसा जगाये वह टकटकी बाँध–निहार रहा था वहाँ तो मूषकों ने अपना साम्राज्य फैला दिया था। वह उस शिवलिंग पर चढ़ कर उछल कूद करके सारा नैवेद्य चट कर रहे थे, साथ ही मलमूत्र भी त्याग रहे थे। इस दृश्य का देख कर उस बालक के अन्तःकरण में एक बोध हुआ जिसने उसके सरल चित्त को झकझोर दिया और क्रान्ति का उदघोष हुआ–"यह सच्चे शिव नहीं हो सकते जो चूहों को नहीं रोक रहे हैं वह दुर्दान्त दैत्य दलनकारी, त्रिपुन्ड धारी, त्रिपुरारी शिव नहीं हो सकते।"

इस बालक का नाम मूलशंकर था। इस घटना ने बालक मूलशंकर को मानव के लिये जड़ता से हटाकर चेतना की ओर जाने के लिये सच्चे शिव की खोज का रास्ता प्रशस्त कर दिया। उनके विचारों में क्रान्ति का जन्म हुआ, पाँच वर्ष बाद पुनः उनके जीवन में एक घटना ने हलचल मचा दी, वह थी उनके चाचा व बहिन की मृत्यु जिन्हें वह बहुत प्यार करते थे। पुनः क्रान्ति ने जन्म लिया। तब उन्होंने जीवन मृत्यु को जानने, सत्य को खोजने का संकल्प लिया "मै इस मृत्यु की विभीषिका से छुटकारा पाने का उपाय खोज कर ही दम लूगां और अपनी इसी क्रान्तिकारी खोज के लिये निकल पड़े गृह त्याग कर–बालक मूल शंकर।

गृह त्याग कर उन्हें अनेकों साधुओं योगियों ज्ञानियों का साहर्चय मिला। सत्य जानने की गहरी लालसा ने उन्हें अनेक प्रकार की विद्यायें तथा योगा सीखने को प्रेरित किया। वह घूमते रहे खोज करते रह सच्चे योगियों की। यहाँ तक कि हिमालय की कन्दराओं में बर्फीले पहाड़ों व प्रचण्ड नदियों का बहाव भी उन्हें अपने लक्ष्य से भटका नहीं सका। इस तरह वह अनेक योगियों की संगति में योगविद्या, तपस्या साधना व व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान बन गये।

एक घटना ने पुनः उनके जीवन में क्रान्ति ला दी जब उन्होंने। गरीबी के कारण एक महिला को अपने पुत्र का शव बिना कफन के नदी में प्रवाहित करते देखा। उस दृश्य को देखकर उनका अन्तर्मन द्रवित हो उठा और उन्हें देश की अवस्था, दुर्दशा, अज्ञानता और गरीबी ने झकझोर दिया। तब उन्होंने अपना लक्ष्य समाज सुधारने, अन्धविश्वास को मिटाने, विधवा विवाह पुन' करने, नारी शिक्षा को बढ़ावा देने की ओर केन्द्रित किया, जब उनसे एक महानुभाव ने कहा कि "आप तो इतने बड़े योगी व साधक हैं इन सामाजिक समस्याओं में कहाँ उलझ रहे हैं, आप स्वयं मोक्ष पाने का प्रयास करें। इस पर उन्होंने कहा ''अकेले मोक्ष पाने से अच्छा है समाज में रह कर पुरुषार्थी भारतीयों को कुरीतियों से दूर करुँ।

उन्होंने अशिक्षा व अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों को दूर करने के लिये वेदभाष्य किये, मूर्तीपूजा का खण्डन, स्त्रीशिक्षा, बालविवाह, विधवा विवाह का वेद प्रमाणित बता कर प्रचार किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना करके जनता का मार्ग दर्शन किया। उन्होंने वेद भाष्यों के आधार और अपने स्वाध्याय के अनुभव से कुछ एसी घोषणाये कीं जिन्हें आज विज्ञान भी स्वीकार करता है।

उनकी प्रथम घोषणा वेदो के आधार पर विमान बनाने के विषय में जिसे वैज्ञानिकों ने आज के युग में सत्य कर दिखाया। उनके सूत्रों के आधार पर सन् 1895 में बम्बई के शिव शंकर बाबूजी तलपदे ने विमान बनाने का प्रयास भी किया था जो असफल रहा। आगे चलकर विदेशों में राइट बन्धुओं ने विमान बनाये जिनकी चर्चा आजकल विमान के क्षेत्र में जोर शोर से होती है।

उनकी दूसरी घोषणा थी– ग्रहों में भी सृष्टि है जिसे आज विज्ञान ने खोज निकाला है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थ में सृष्टि रचना के प्रकरण में लिखा है।

उनकी तीसरी घोषणा थी– सृष्टि के आरम्भ में पृथिवी के गर्भ से युवा मानव की उत्पत्ति हुई जो अमैथुनी सृष्टि थी। इस बात को भी आज के वैज्ञानिकों ने सत्य सिद्ध कर दिखाया है परखनली द्वारा बिना माता पिता के संयोग के मानव की उत्पत्ति सम्भव है।

चौथी घोषणा थी– कि आर्य भारत के मूल निवासी थे जिनकी उत्पत्ति तिब्बत में हुई। इस बात को भी आज के इतिहासकार स्वीकार करने लगे हैं।

महर्षि ने वेदों को सब सत्य सत्यविद्या का आधार बताया। पूर्व मनीषियों द्व ारा किये गये अनर्गल वेद भाष्यों को गलत सिद्ध किया तथा वेदों के आधार परसमस्त विद्याओं को सिद्ध किया। आज के वैज्ञानिक उनके तथ्यों को स्वीकार करने लगे हैं कि वेदों में सब प्रकार की विद्यायें सूत्र रुप में वर्णित हैं। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा निर्मित परमाणु बम इसी आधार पर बनाया गया है। चिकित्सा शास्त्र में भी आयुर्वेद के सिद्धान्तों को मान्यता मिलने लगी है और रोग को ठीक करने में मनस्तत्व की प्रधानता को स्वीकार करने लगें हैं।

बालक मूलशंकर को केवल बोध ही नहीं हुआ उनके अन्दर क्रान्ति के बीज भी थे, जो दयानन्द बन कर महर्षि दयानन्द बने मन्त्र हटा बने और जन जागरण किया। उन्होंने अकेले ही आज़ादी के विगुल को बजाया, पाखन्ड खण्डिनी पताका फहराई। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का साहस किया। ईश्वर के प्रति सच्ची आस्था ने उनके जीवन में बोध ही नहीं क्रान्ति भी पैदा कर दी।

2/25 आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर–हरिद्वार

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

शिवभक्त चेते! क्या ...

उत्पन्न करने वाले के लिए, **च**=और, **मयोभवाय**=आधिदैविक मन, इन्द्रियादि का सुख उत्पन्न करने के लिए, **नमः**=स्तुति है, **च**=और, **शंकराय**=शम्=मोक्ष सुख को करने वाले के लिये, **च**=और **मयस्कराय=मयस्**–मन, इन्द्रिय आदि के सुख को करने वाले के लिये, **नमः**=स्तुति है, **च**=और, शिवाय=धन धान्य आदि मंगल सुख करने वाले के लिए, च=और, शिवतराय=अतिशय पूर्वोक्त मंगल, सुख स्वरूप के लिए, **नमः**=स्तुति है।

तात्पर्य हुआ उस अद्वितीय सत्ता के जैसे **ओम्, ब्रह्म, ईश्वर** आदि नाम हैं वैसे ही उस के **शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर** नाम हैं। वह ही मोक्ष आदि तीनों सुखों को उत्पन्न करता है व प्रदान करता है। सुखों की उत्पत्ति का वह ही **करः, कर्ता**=करने वाला है। **शिव भिन्न है, शंकर भिन्न है यह बुद्धिभेद अज्ञान मात्र है, सत्यज्ञान पूर्ण तथ्य नहीं। शिवभक्त किसी भ्रम में न रहें।**

ओम् पदवाच्य शिव, शंकर ईश्वर के इसी विशाल स्वरूप को जानने के लिये **शिवरात्रि पर्व की फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी** की रात गुजरात प्रान्त टंकारा गाँव के **ज्ञानसूर्य महर्षि दयानन्द** ने महत्त्वपूर्ण अध्यवसाय किया था। उस अध्यवसाय में उन्होंने शिवरात्रि पर्व पर व्रत क्या किया! सत्य ही खोज निकाला। उस सत्य का प्रकाश **महर्षि दयानन्द ने नमः शम्भवाय** मन्त्र के अर्थों में निर्दिष्ट किया है।

नमः शम्भवाय च इस यजुः मन्त्र के अर्थ महर्षि दयानन्द ने **यजुर्वेद भाष्यम्, आर्याभिविनयः, पञ्चमहायज्ञविधिः** आदि स्थलों पर किये हैं। महर्षि ने उन अर्थों में सर्वत्र परमात्मा के शिव, शंकर स्वरूपों के वैविध्य का निर्देश करते हुये सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्वों का संकेत किया है।

महर्षि द्वारा संकेतित मन्त्रार्थों के सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्व प्रत्येक शिव, शंकर के उपासक के लिये अति उपादेय हैं। उदाहरणतः **पञ्चमहायज्ञविधिः** में निर्दिष्ट महर्षि के गम्भीर भाव हैं–

नमः शम्भवाय च=जो सुखस्वरूप, **मयोभवाय च**=संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, **नमः शंकराय च**=कल्याण का कर्ता, मोक्षस्वरूप, धर्मयुक्त कामों को ही करने वाला, मयस्कराय च=अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्म कामों में युक्त करने वाला, **नमः शिवाय च शिवतराय च**=अत्यन्त मंगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष सुख देने हारा है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

पञ्च.यज्ञविधि, सन्ध्यो.पृ.27।।

इन उपर्युक्त वेदमन्त्र एवं महर्षि दयानन्द के मन्त्रार्थ से भली भाँति परिज्ञात है कि शिव, शंकर पद भी एक अद्वितीय सर्वव्यापक ईश्वर के ही नाम हैं, भिन्न–भिन्न पदार्थों के नहीं। सर्वव्यापक, निराकार ब्रह्म आदि नाम स्वरूप वाला ईश्वर ही सबका उपास्य है। उसकी ही नित्य एवं शिवरात्रि पर्व पर उपासना की जाती है। वह ही शिव है, शिवतर है, शंकर है, शम्भव है, मयोभव है, मयस्कर है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के शिव, शंकर आदि स्वरूपों को प्रतिपादित कर जहाँ अध्यात्म के गम्भीर रहस्य का प्रकाश किया है, वहीं शिवरात्रि पर्व के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया है कि शिवोपासक शिव, शंकर भिन्न हैं, इस भ्रमजाल को तोड़ें, और शिवरात्रि पर्व व्रत को सार्थक करें।

प्राचार्या–पाणिनि कन्या महाविद्यालय,
वाराणसी–10

क्या ध्वस्त मलबे या नींव पर ही सैकड़ों मस्जिदें निर्मित हैं?

● हरि कृष्ण निगम

आज के दौर में की गई कुछ अद्यतन वैज्ञानिक खोजों के कारण सहसा विश्व भर के पुरातात्विक संगठनों एवं जग–प्रसिद्ध पुरातत्वविदों व इतिहासकारों को अनेक देशों में प्रचारित अनेक दुराग्रहों एवं मान्यताओं के धुंधलेपन को दूर कर समस्त इतिवृत्त के कालक्रमों या विजयी आक्रान्ताओं अथवा विजित देशों के मूल निवासियों को पुरानी हीनता ग्रंथियों को दूर करने का एक आकस्मिक वरदान जैसा भी प्रदान किया है।

फिर भी इन नई खोंजों ने भारत को एक यथोचित वैज्ञानिक तथ्यपरक दृष्टिकोण देकर भी कदाचित देश के दशकों पहले से मुस्लिम–परस्त इतिहासकारों के बौद्धिक प्रपंच का अभी तक पूरी तरह भण्डाफोड़ नहीं किया है। वर्तमान सरकार का इस क्षेत्र में एक छोटा कदम भी हमारे विकृत इतिहास–लेखन में एक दूसरा ही नया अध्याय खोल सकता है जो सेकुलरवादी राजनीतिक पाखण्ड द्वारा ही अब तक रचा गया था।

आज के वैज्ञानिक उपकरण चाहे भूमिगत दबी हुई प्रस्तर अथवा धातुओं की प्रतिमायें हों, उत्कीर्ण प्रागैतिहासिक चित्रकारी या लिपि, शिलालेख अथवा मुद्रायें हों अथवा हिन्दू–जैन मन्दिरों की नींव या भग्नावशेषों पर आक्रान्ताओं द्वारा मस्जिदें खड़ी की जाने की गुत्थियाँ हों, उनका अभिलेखीय अध्ययन त्रियामी–थ्री डाइमेंशनल–चित्रों द्वारा विज्ञान–सम्मत दृष्टि से किया जा सकता है। जब से कार्बन डेटिंग प्रणाली के साथ–साथ भूतल की पर्तें भेदते हुए तीन आयाम वाली लेज़र अथवा राडार प्रणाली का उपयोग दुनिया भर के भूगोल और इतिहास के विश्वविख्यात संगठनों व अपनी पहल पर समर्पित पुरातत्वविदों को उपलब्ध हुआ है, बिना किसी उत्खनन या खुदाई के बहुमूल्य पुरातात्विक धरोहरों के बारे में यह पता लगाना सम्भव हो गया है कि उनके भीतर के प्रस्तर खण्ड या ईंटें अथवा भराव की सामग्री किसी धराशायी या ध्वस्त किए गए मन्दिरों के मलबे से बनी हैं या उनके अवशेषों पर तत्कालीन आक्रमणकारी द्वारा उनके ऊपर निर्मित करवाए गए थे।

स्वयं बाबा साहब अम्बेडकर ने इस देश के मुस्लिमों के बारे में बहुत पहले एक कड़वा यथार्थ लिखा था कि हिन्दू सदैव काफिर रहेंगे और सम्मान या बराबरी के योग्य नहीं हैं। चूंकी सदियों से हमलों में मन्दिरों व चैत्यों का ध्वंस किया गया, जबसे धर्म परिवर्तन किया गया, सम्पत्ति लूटी गई, इसलिए हिन्दुओं को उनके अतीत के हमलों की याद ताजा रखना उनका अधिकार रहा है–इसमें कोई अचरज की बात नहीं है। भारत हिन्दुओं और मुसलमानों की साझी मातृभूमि नहीं हो सकती है।

जब से श्री प्रफुल्ल गोरडिया का 'हिन्दू मस्जिद्स' नामक ग्रंथ प्रकाशित हुआ था जिसमें सैकड़ों हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त कर उनके स्थानों, कार्यक्रम व अन्य साक्ष्यों द्वारा उनको मस्जिदों में रूपान्तरित किए जाने का विवरण, सूची व विशद अध्ययन प्रकाशित हुए थे, देश के सरकारी पुरातत्व विभाग के भी कान खड़े हुए थे। पर मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, जो देश के प्रथम केन्द्रीय शिक्षा मंत्री थे उनके द्वारा इस सम्बन्ध में पारित प्रतिबन्ध के अधिनियम के अनुसार किसी भी कथित इस्लामी धरोहर को जांच के नाम पर भी छूना या उन्हें क्षति पहुंचाने की कल्पना भी करना किसी भी देशवासी के बस में नहीं था। उन्होंने चतुरता से उन्हें पूर्ववर्ती स्थिति में रखने की जैसे मुसलमानों की गारंटी का प्रावधान मुहैया करा दिया था। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की अक्षम्य ऐतिहासिक भूलें उस समय से सर्वविदित हैं जब इस मंत्रालय का नेतृत्व सन 1970 के दशक से ही सैयद नूरुल हसन करते थे।

तब से चाहे शिक्षा या मानव संसाधन मंत्रालय हो या भारतीय इतिहास की शोध परिषद–इण्डियन काउन्सिल ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च हो, वे वामपंथियों व कथित सेक्युलर विचारकों के गढ़ होने के कारण सदैव अपने ही वास्तविक इतिहास को छल–छद्म से छिपाते व विकृत करते रहे। पिछली एक सहस्त्राब्दी में मन्दिरों की नींव या भग्नावशेषों पर मस्जिदें बनती रहीं और जो बात मुस्लिम इतिहासकर भी गर्व से स्वयं लिखते रहे, उस इतिहास को आधुनिक भारत के कलुषित साम्यवादी व कांग्रेसी झुठलाने में लगे रहे। यह देश की पूरी की पूरी पीढ़ी के साथ धोखे की साजिश थी कि इस्लामी हमलावरों ने सदियों तक निरन्तर हिन्दुओं के धर्मान्तरण के साथ–साथ मन्दिरों को ध्वस्त कर उनको मस्जिदों की शक्लें दीं पर स्वतंत्रता के बाद भी ऐसे पाशविक अपकृत्यों पर सरकार ने कोई सार्थक बहस न होने दी। उलटे बाद में भी पारित किए संशोधनों व अधिनियमों में उन सारी ऐसी मस्जिदों की नींव की एक ईंट की जांच करने की भी मनाही थी। यद्यपि उनकी अपनी परिभाषा में उनके धर्म की ऐसी मस्जिदें नाजायज थीं पर फिर भी मुस्लिम विजयी दर्प में मुसलमानों को पूर्ववर्ती गलतियों का काई मलाल नहीं! अयोध्या में राम मंदिर था या नहीं, इस पर क्षुद्र स्तर की बहस वर्षों से जारी है और मुसलमानों के बाबरी ढांचे के ध्वस्त होने के बाद के हाहाकार में साम्यवादी व राजनीति प्रेरित सहधर्मी हिन्दू ही मुसलमानों के कवच के रूप में सामने आए। अन्य धर्मों में अपने आराध्यों पर लांछन लगाने वाले ईशनिंदा के अपराध में 'धर्मच्युत' कहलाते और घोर अकल्पनीय दण्ड के शिकार हो सकते थे। जब हिन्दुओं के मन्दिरों पर प्रतिशोध के हिंसक आक्रमण होते रहे, हिन्दू ही निष्क्रियता दिखा कर उनके प्रति शान्ति बनाने का दम्भ भरते थे।

हमारे देश की संसद में सर्वसम्मति से पारित किया गया कोई भी अधिनियम इतना शर्मनाक व राष्ट्रीय लज्जा का विषय नहीं कहा गया है जैसा 1991 का "प्लेसेज ऑफ वरशिप (स्पेशल प्राविजन्स) अधिनियम जो विडम्बना है कि नरसिंहराव के नेतृत्व वाली सरकार के समय हुआ था। इस अधिनियम के अन्तर्गत यदि कोई राष्ट्रभावना से प्रेरित होकर पूर्व हिन्दू मन्दिर पर बनी नाजायज मस्जिद को हिन्दुओं को सद्भावना के कारण लौटाना भी चाहे तो ऐसा नहीं कर सकता है। इसी अधिनियम के अन्तर्गत धार्मिक स्थलों की जैसी स्थिति 1947 में थी, उसे ही अक्षुण्ण रखने का प्रावधान है।

इस सम्बन्ध में अविभाजित भारत का वह प्रकरण याद करना प्रासंगिक होगा जब पंजाब में सर सिकन्दर हयात खान एक चर्चित मुख्यमंत्री थे। लाहौर के मुसलमान शहीदगंज गुरुद्वारा पर कब्जा करना चाहते थे जो महाराजा रणजीत सिंह के शासक बनने से पहले तक एक मस्जिद थी। सर सिकन्दर हयात का कहना था कि अगर आज मुसलमानों ने गुरुद्वारे को फिर मस्जिद बना लिया तब देश में मस्जिदें जो एक समय हिन्दू मन्दिर थे उनको रखने का मुसलमानों का अधिकार स्वतः समाप्त हो जाएगा। उन्होंने यहाँ तक कह डाला कि दिल्ली में कुतुब मीनार के निकट की विशाल कुव्वत–उल इस्लाम (इस्लाम की शक्ति) नामक दिल्ली की वह मस्जिद जो 67 हिन्दू मंदिरों के मलबे व अवशेषों से बनी है उसे हिन्दुओं को देनी पड़ेगी। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि कई बार पराजित होने पर भी तुर्की घुड़सवार सेना के साथ मध्य एशिया का आक्रमणकारी मोहम्मद गोरी जब 1192 में पृथ्वीराज चौहान को तराइन के युद्ध में पराजित कर सका तब उसने लालकोट को लूट कर जला डाला था। सर हयात खान ने चेतावनी दी थी कि इस मस्जिद व अजमेर शरीफ को भी इस तर्क से भविष्य में हिन्दुओं को सौंपना पड़ेगा।

यदि यूरोप व पश्चिमी मानदण्डों से देखें तो स्थिति भारत से पूरी तरह से विपरीत थी। जब मुसलमानों ने स्पेन के ईसाइयों को पराजित किया था अनेक बड़े चर्च मस्जिदों में बदल दिए गए थे। पर जब 15 वीं शताब्दी में ईसाइयों ने मुस्लिमों को खदेड़ दिया था तब सभी मस्जिदें कैथीड्रेल, चर्च और चैपल में बदल दिए गए थे। रूस व यूरोप के अनेक देशों में यही हुआ था। प्रो. आर्नोल्ड टायनबी जब भारत आए थे उन्होंने इसका स्पष्ट उल्लेख किया था। 50 के दशक के मध्य में अपने आजाद भाषण–श्रृंखला में उन्होंने कहा था कि जब वे बनारस में थे उन्हें इस बात से धक्का लगा था कि गंगा के पवित्र तट पर विश्वनाथ परिसर से लगी विशाल मस्जिदें व ईदगाह है। मथुरा में भी कृष्ण के जन्म स्थान पर मुस्लिम परिसर व मस्जिद देश के शरीर पर एक व्रण की तरह लगते हैं। सभी जानते हैं कि कृष्ण जन्मभूमि पर ईदगाह औरंगजेब द्वारा बनवाया गया था जो हिन्दुओं के लिए सदैव कष्टकर ऐतिहासिक याद रहेगी।

इसी तरह शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी जो तराइन के 1192 के द्वितीय युद्ध के बाद अजमेर में विशाल हिन्दू मन्दिरों के स्तम्भों व प्राचीरों को देख कर इतना क्रोधित हो गया कि उसमें अपने गुलाम जनरल कुतुबउद्दीन ऐबक को आदेश दिया कि वह उनको तुरंत गिरा दे और वहाँ 60 घंटे के भीतर एक ऐसा ईदगाह बनाए जिससे लौटते समय वहाँ नमाज पढ़ सके। इसी को आज "अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' कहा जाता है जहां पहले 70 मन्दिर खम्भों से ढँकी विशाल छत के भीतर थे। 30 फीट ऊंचे नक्काशी किए स्तंभ एक आश्चर्य कहे जाते हैं जो आज भी अनेक संग्रहालयों में रखे हैं।

वैसे तो देश के हर कोने में इस अभिशाप के पुरातात्विक उदाहरण मिल जाएंगे पर पश्चिमी बंगाल के रायगंज और पश्चिमी दीनाजपुर के बीच राष्ट्रीय महामार्ग 34 जो मालदा जाता है वहाँ पर एक विशाल मस्जिद है जो एक विभिन्न रंग के विशाल पत्थरों के चबूतरे पर लाल ईंटों से बनाई गई है। कोई भी यात्री इसकी नींव के पास गणपति, शिव पार्वती, स्वास्तिक, शंख, मीन, यक्ष, यक्षिणियों, द्वारपालों की मूर्तियों को स्पष्ट देख सकता है। मुखाकृतियों को विकृत करने की चेष्टा भी दिखती है। इस मस्जिद की उत्तरी दीवाल में 20 आले हैं जिनमें मंदिरों जैसी आकृतियां व पवित्र प्रतीक हैं। सन् 1888 में बंगाल के पुरातत्व विभाग के इंजीनियर जोसेफ डेवीदिच मिलिक बेगलारोफ ने इसे खोज निकाला था और इसे अदीना मस्जिद कहा था। मूल रूप से इस विशाल शिव मंदिर को मस्जिद कहना भी लज्जा का विषय प्रतीत होता है। स्वयं हर प्रसिद्ध इतिहासकार ने विस्तार से जौनपुर के प्राचीन अटाला देवी मंदिर के मस्जिद बनाए जाने और दूसरी अनेक विशाल मस्जिदों के परिसरों में हिन्दू भवनों के अवशेषों को जड़ने के प्रयत्नों में बीसों पृष्ठ लिख डाले हैं पर हिन्दू बुद्धिजीवियों की भीरुता व विवादों से बच निकलने की आदत, अब वह समय आ चुका है, छूटनी ही चाहिए।

सन 1669 में धर्मान्ध औरंगजेब ने

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

पत्र/कविता

वैदिक धर्म सनातन है

सुनो, सुनो ए दुनियावालो! वैदिक धर्म सनातन है।
जितनी पुरानी सृष्टि, उतना ही वेद पुरातन है।।
राम–चित्र की पूजा करते चरित्र नहीं अपनाते हैं।
योगेश्वर थे जो, उनका भोगेश्वर रूप दिखलाते हैं।।
पूर्वजों के चरित्र छोड़ जो चित्र–पूजा अपनाते हैं।
होते हैं अरक्षित वे तो, अपना अस्तित्व गँवाते हैं।।
राम–कृष्ण की सच्ची पूजा वैदिक धर्म स्थापन है।
सुनो, सुनो ए दुनियावालो! वैदिक धर्म सनातन है।।

धन से ईसाइयत, हिंसा से हुआ इस्लाम का विस्तार है।
हिंसा–विरुद्ध जन्मा बौद्ध, कर रहा मांस का आहार है।।
पुराणों का भी क्या कहना, न गप्प का कोई पारावार है।
व्यक्ति–जात मतों का न कोई पूर्ण–सत्य आधार है।।
इन मिथ्या मतों के कारण, अभी वेद–सूर्य तमाच्छन है।
सुनो, सुनो ए दुनियावालो! वैदिक धर्म सनातन है।।

बाइबिल की धरा चपटी, सूरज भ्रमण करता है।
कुरान का विज्ञान–नबी चाँद के टुकड़े करता है।।
बौद्ध–मत–सिद्धान्त भी, विज्ञान पर कहाँ ठहरता है।
पौराणिक गप्प भी सत्य पर खरा नहीं उतरता है।।
विज्ञान ने इन ग्रंथों का हिला दिया अब आसन है।
सुनो, सुनो ए दुनियावालो! वैदिक धर्म सनातन है।।

सर्वज्ञ–ईश–ज्ञान में, विज्ञान–विरोध का स्थान नहीं है।
कहते हैं जो वेद, कहता आधुनिक विज्ञान वही है।।
वेद–विज्ञान दोनों में धरती सदा गतिमान रही है।
ग्रहों सहित सूर्याकर्षण में यह वर्त्तमान यही है।।
आज विज्ञान ही कर रहा वैदिक सत्य का सत्यापन है।
सुनो, सुनो ए दुनियावालो! वैदिक धर्म सनातन है।।

कहता है 'ब्राउन', विज्ञान वैदिक धर्म का आधार है।
'जैकोलियट' के शब्दों में , वैज्ञानिक वेद का विचार है।।
'ह्वीलर' की दृष्टि में विद्युत्–विमान ऋषि–अविष्कार हैं।
स्नायु–तंत्र–ज्ञान, ऋग्–अवदान 'रैले' के अनुसार हैं।।
विद्वानों के कथनों से हो रहा अब वेद का विज्ञापन है।
सुनो, सुनो ए दुनियावालों, वैदिक धर्म सनातन है।।

सूर्य देव चौधरी
स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची–1

सूर्य के सम्बन्ध में भ्रान्ति न फैलायें

'आर्यजगत्' के 17 जनवरी 2016 के अंक में श्री कृष्ण मोहन गोयल का एक पत्र छपा है, जिसका शीर्षक है– **'ऊर्जा के स्तम्भ को नमन करने में परहेज क्यों**?' इसमें लिखा है कि –"सूर्य का कुछ भी क्षरण नहीं होता है, हम लोग सूर्य की शक्ति का आकलन नहीं कर पाये, सूर्य की शक्ति अपरम्पार है, असीम है, फिर भी महान् ऊर्जा के स्तम्भ को नमन करने से परहेज क्यों? लेखक ने अन्त में अपना मूल आशय प्रगट करते हुए लिखा है–"विश्व के अनेक देशों में सूर्य की आराधना करने की परम्परा हज़ारों सालों से चली आ रही है। इसी परम्परा को निभाते हुए आर्य समाज में यज्ञ के दौरान आहुति देते समय सूर्य को नमन किया जाता है। सूर्य सर्वशक्तिमान है और सदैव सर्वशक्तिमान रहेगा।"

उपर्युक्त लेख में कई दोष हैं। लेख आर्यसमाज के सिद्धान्त के विरूद्ध जान पड़ता है।

वास्तविकता यह है कि सूर्य (Sun) एक जड़ कार्य–पदार्थ है, जिसकी रचना ईश्वर ने प्रकृति (उपादान –कारण) में से की है– सृष्टि की रचना करते समय। **'सूर्याचन्द्रमसौ धाता...'** ऋग्वेद का यह मन्त्र जो वैदिक सन्ध्या में पढ़ा जाता है, यह इसका एक प्रमाण है। संयोग से उत्पन्न होने वाला कार्य–पदार्थ एवं उस कार्य–पदार्थ के गुण कदापि अनन्त, असीम, अपरम्पार नहीं हो सकते। सूर्य भी अति विशाल होते हुए भी अन्त वाला, ससीम ही है, अनन्त नहीं है। वह सदैव एकरूप विद्यमान नहीं रहता है, परन्तु परिवर्तित होता रहता है– परिणामी प्राकृतिक पदार्थ होने से। वह उत्पन्न हुआ है, अतः एक–न–एक दिन अवश्य नाश को प्राप्त होने वाला है।

यह सत्य है कि सूर्य ऊर्जा का महान् स्रोत है, मगर इससे वह चेतन नहीं हो जाता। ईश्वर ने उसकी रचना ही ऐसी की है। मनुष्य (जीवात्मा) स्वभावतः अल्पज्ञ होने से ईश्वर द्वारा निर्मित किसी भी पदार्थ को एवं उसके वेदरूपी ज्ञान को पूर्णतः शतप्रतिशत कभी नहीं जान पाता। सूर्य को भी मनुष्य कभी पूर्णतः नहीं जान पाएगा। सूर्य ही क्या, एक चींटी को भी पूर्णतः नहीं जाना जा सकता। इसी से ईश्वर की महानता का, उसके अनन्त ज्ञान का, उसकी अद्‌भुत रचना–शक्ति का अनुमान किया जा सकता है। वही ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सूर्य सर्वशक्तिमान नहीं है। ईश्वर अपने समस्त कार्यों को बिना अन्य किसी की सहायता लिए कर सकने में पूर्णतः सक्षम है, इसीलिए उसे 'सर्वशक्तिमान' कहा जाता है। केवल एक वही सर्वशक्तिमान है।

ईश्वर ने सूर्य में अनेक ज्ञात–अज्ञात दिव्य गुणों का स्थापन किया है। इसलिए हमें सूर्य का ज्ञानपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए। वही उसकी सत्ता का प्रयोजन है। परन्तु उसे ईश्वर का स्थानापन्न समझकर उसकी आराधना, नमन या नमस्कार नहीं करना चाहिए। जड़ पदार्थ ही एसी अज्ञान–जन्य पूजा–उपासना एक प्रकार की नास्तिकता ही है। सूर्य ईश्वर जैसा कभी उपासनीय नहीं हो सकता। ईश्वर चेतन है, सूर्य अचेत–जड़ है। सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने लिखा है–**"सच तो यह है कि सूर्यादि लोक जड़ हैं।"** जड़ पदार्थों का स्वयं तथा अन्यों के कल्याण के लिए ज्ञानपूर्वक प्रयोग करना है, उन्हीं को ईश्वर मान लेना तो अविद्या है।

यह मानना बड़ी भ्रान्ति है कि आर्य समाज में यज्ञ के दौरान आहुति देते समय सूर्य को नमन किया जाता है। ऋषिदयानन्द कृत **'पच्चमहायज्ञविधिः'** ग्रन्थ में **'ओं सूर्यो ज्योति ज्योतिः सूर्यः स्वाहा'** इत्यादि आहुति के मन्त्रों में आए 'सूर्य' शब्द का अर्थ **'चराचर का आत्मा, प्रकाश–स्वरूप और सूर्यादिप्रकाशक लोकों का भी प्रकाशक परमेश्वर'** ही किया है, जड़ सूर्य नहीं।

ऋषि ने **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** के **'वेदविषयविचारः'** प्रकरण में स्पष्ट लिखा है–**"इनमें से (सूर्यादि 'देवों' मे से) कोई भी उपासना के योग्य नहीं है, किन्तु व्यवहारमात्र की सिद्धि के लिए ये सब देव हैं, और सब मनुष्यों के उपासना के योग्य तो देव एक ब्रह्म ही है।"**

अतः सूर्य कदापि उपासनीय नहीं हो सकता और उसे नमन या नमस्कार करना भी ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों से नितान्त प्रतिकूल है। सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने लिखा है–**"किसी जड़ पदार्थ के सामने शिर झुकाना वा उसकी पूजा करनी सब मूर्तिपूजा है।"** अतः सूर्य की आराधना–पूजा अर्चना, नमन आदि करने को अविद्याजन्य व्यवहार–मूर्तिपूजा ही माना जाएगा। आर्य लोग विद्यायुक्त व्यवहार करते हैं।

अतः विनम्र आग्रह है कि सूर्य के सम्बन्ध में भ्रान्ति न फैलायें।

भावेश मेरजा
8/17 टाउनशिप नमर्दा नगर, भरूच
गुजरात 392015

****

☞ पृष्ठ 09 का शेष

क्या ध्वस्त मलबे या नींव ...

एक फरमान जारी किया था–काफिरों के सारे मंदिर व पाठशालाएं नष्ट कर दिए जाएं और उनकी पूजा पाठ पर रोक लगाई जाए। सोमनाथ का विश्वप्रसिद्ध शिव मंदिर महमूद गजनवी ने लूटा और नष्ट किया था पर राजा भीमदेव ने उसका पुनर्निर्माण किया था। औरंगजेब ने उसे फिर मिट्टी में मिला दिया था। मथुरा का प्रसिद्ध मंदिर वीर सिंह बुंदेला ने विशाल राशि खर्च कर बनवाया था जिसे औरंगजेब की आज्ञा से तोड़ कर मस्जिद बनाई गई थी। मूर्तियों को तोड़ कर, उन टुकड़ों को जहांनारा मस्जिद की सीढ़ियों पर चुनवा दिया गया जिससे उसे मुसलमान रौंदता हुआ जाकर नमाज पढ़े। उज्जैन और मालवा के सारे मंदिरों को भी औरंगजेब ने गिरवाया और उनकी जमीन व सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया। उड़ीसा, राजस्थान, गुजरात के सारे मंदिरों को उसने ध्वस्त कराया। उदयपुर पर आक्रमण कर वहां 180 मंदिर, चित्तौड़ के 63 और अम्बर के 66 मंदिर उसने ध्वस्त कराए। छोटे मन्दिरों की क्षेत्रवार सूची में अनगिनत स्थान थे जो मुस्लिम इतिहासकार स्वयं देते रहे। यहां तक कि दिल्ली की जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर पड़े रहने वाले नंगे फकीर सरमद को उसने गला काट मरवा दिया क्योंकि उसने कहा 'अनलहक'–मैं ईश्वर हूँ! औरंगजेब को अनेक इतिहासकारों ने भी जल्लादों का जल्लाद कहा था पर यह एक क्रूर विडम्बना है कि देश की राजधानी दिल्ली में ही हमने 'औरंगजेब रोड' बनाई है, उसका प्रतिरोध करने वालों का नाम भी कहीं नहीं लिया जाता है।

हाल के अंग्रेजी के प्रमुख पत्रों की कतरनें, नई पीढ़ी के पुरातत्वविदों के वैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग द्वारा कई देशों का जिस तरह फिर नया इतिहास लिखा जा रहा है, उस पर नया प्रकाश डालती हैं। लंदन से कौन्तेय सिन्हा नामक संवाददाता द्वारा 'टाइम्स आफ इंडिया' के 11 सितंबर 2014 के अंक में प्रकाशित समाचारों के अनुसार प्रसिद्ध पुरातन पर्यटन स्थल "स्टोनहेंज" के दो किलोमीटर के इर्दगिर्द जमीन के नीचे सदियों पुराने विशाल पत्थरों के 17 विशाल प्राचीन स्तम्भ एक कतार में–धरती के भीतर पाए हैं। ब्रिटिश पुरातत्वविदों ने शक्तिशाली राडार व ड्रोन के साथ साथ सेटेलाइट के माध्यम से धरती के भीतर खोज निकाले हैं जिनका पहले किसी को पता भी नहीं था। इसके साथ ही विशाल प्रागैतिहासिक लौह व कांसे के युग की रोमन बस्तियों के अवशेषों के वहाँ आसपास होने के भी साक्ष्य मिले हैं। ये खोजें भूमि के स्तरों के परे देख सकने वाली रिमोट सेंसिंग तकनीकों व विशेष राडार कैमरों द्वारा जियोलॉजिकल सर्वेक्षण के चार मीटर की गहराई तक देख सकने की क्षमता के कारण हुई हैं। यह भी साफ पता चला है कि इंग्लैण्ड के इस 'स्टोनहेंज' जैसे स्थल मात्र प्राकृतिक नहीं बल्कि वहाँ पाए गए भूमिगत पत्थर व स्तम्भ 3100 ईसा पूर्व के हैं। यह वैज्ञानिक सुविधा भारतीय पुरातात्विक विशेषज्ञों को क्यों नहीं दी जाती है, जिससे प्राचीन तोड़े गए मंदिरों व उनके निकट के परिसरों की नींव का अध्ययन किया जा सके। कानूनी प्रावधानों के कारण इस देश में हिन्दू मंदिरों पर बनी मस्जिदों की गुत्थियाँ कदाचित कभी नहीं सुलझेंगी, यदि हमारे पुरातत्वविद भी उनके विस्तृत डिजिटल मानचित्र बनाने में अनुमति नहीं पाते। अनेक दीवारों, प्राचीरों, पत्थरों या ईंटों व चुनी गई जालियों के पीछे अनगिनत प्राचीन संस्कृत व द्रविड़ भाषाओं की तिथि के साथ–साथ वे प्रतीक जो स्वास्तिक, ओम, चक्र, मीन, शंख, वज्र, यक्ष, यक्षिणी या द्वारपालों को इंगित करते हैं सारा रहस्य खोल देते।

कम्बोडिया के विशालतम हिन्दू मन्दिर अंगकोरवाट की आज की खोज व उससे लगी विशालकाय कई स्तरों पर बनाई गई राजधानी अंकोर थोम की आधुनिक युग की खोज एक महाकाव्य के स्तर की है जिस पर अनेक विशेषज्ञों के ग्रंथ उपलब्ध हैं। आज का भारतीय तो इस बात से भी अनभिज्ञ है कि एक समय हमारे देश के तीर्थयात्री व श्रद्धालु यहाँ म्यांमार के रंगून के रास्ते (भूमार्ग) से भी जाते थे। पहले नेपाल के पशुपतिनाथ तक की यात्रा फिर अगला पड़ाव विष्णु को समर्पित कम्बोडिया का मन्दिर होता था। आज भी दक्षिणी–पूर्वी एशिया की हिन्दू खमेर जाति जो थाईलैण्ड, लाओस, म्यांमार व जावा सुमात्रा और वियतनाम तक फैली है यहां धर्मान्तरण के बावजूद इसे अपनी धरोहर मानती है, वहां आती है। काल के प्रवाह में हिन्दुओं के नौकायन के विशेषज्ञ जिन्हें वंशज माना जाता था, स्वयं यहां का महत्व भूल गए। कालान्तर में आज के हिन्दू इस सारे दक्षिण पूर्वी हिन्दू एशिया की पट्टी से अनभिज्ञ होते गए। आज भी अमेरिकी विशेषज्ञों ने 'नेशनल ज्योग्राफिक' पत्रिका व सी.एन.एन. व बी.बी.सी. के इतिहास संबंधी चैनलों के माध्यम से कम्बोडिया के अंगकोरवाट और इण्डोनेशिया के बोबुदुर जैसे भव्य व चमत्कृत करनेवाले हिन्दू–बौद्ध विशाल मन्दिर परिसरों लगी भूगर्भ में कई स्तरों पर नए आधुनिक शहरी–वास्तुकला व जटिल नगर योजनाओं का खुलासा किया है और कहा है कि प्राचीन विश्व के पिरामिडों से भी आगे वे मिस्र की सभ्यता को भी पीछे छोड़ देते हैं। हमारी सभ्यता के मूल देश की साहसी उपशाखायें इतनी विस्मयकारी व असाधारण थीं जिन्हें पहले अंग्रेजों ने फिर स्वयं वामपंथियों ने छिपाने की कोशिश की थी।

हिन्दू–मोन–खमेर जातियों के हिन्दू धर्म के प्रति समर्पण 9 वीं से 12 वीं शताब्दी के बीच अपने चरमोत्कर्ष पर था। अंगकोरवाट 1150 ई. के इर्द तक फला–फूला था और अंगकोर थोम 1225 तक पूरा हुआ था। इसमें दक्षिणी–पश्चिमी चीन के थाई मूल के हिन्दुओं और इण्डोनेशिया द्वीप समूह व वियतनाम व लाओस के हिन्दुओं का विजय नगर साम्राज्य के हाम्पी के निकटवर्ती क्षेत्रों का मिलन हुआ था जिन्होंने अपनी आर्य भूमि के सभी नामों के स्थल भी वहाँ पुनः रोपित कर डाले थे। एक अमेरिकी पुरातत्वविद ने कहा है कि विश्व के आश्चर्य के रूप में हिन्दू स्थापत्य को मिस्र के पिरामिडों से भी ऊँचा दर्जा दिया जाना चाहिए।

वायुयानों से संचालित लेजर टेक्नोलॉजी व इमेजिंग द्वारा जमीन के भीतर सड़कों, सुरंगों व नहरों का एक नेटवर्क भी खोज निकाला गया जो कम्बोडिया के अंगकोरवाट मंदिर परिसर को 'थोम' काम्लेक्स से जोड़ता है। सिडनी की नेशनल एकाडमी ऑफ साइन्सेज का एक शोध प्रकाशन हाल में सामने आया है जिसमें लेजर किरणों द्वारा की गई खोज से 1200 वर्षों पहले के एक ऐसे सुनियोजित भूमिगत शहर को खोज निकाला गया है, जो अब पुरातत्वविद अभिलेखित कर रहे हैं। कम्बोडिया के राष्ट्रीय ध्वज पर 12 वीं शताब्दी के अंगकोरवाट हिन्दू मंदिर अंकित किया जाता है और यूनेस्को ने इसे पहले ही विश्व धरोहर घोषित कर दिया है। वैसे पिछली पीढ़ी के पुरातत्वविदों को पहले ही यह अनुमान था कि यह महेन्द्र पर्वत नगर सिमनदीव प्रांत के फ्नोम कुलेन पहाड़ के घने जंगलों के वितान में ही कहीं छिपा है। 'एयर बार्न' लेजर किरणों के द्वारा लम्बी दूरियों के पहले विस्तृत मानचित्रों में अनेक अनखोजे भवन, मंदिर मार्गों व उनके चतुष्कोणों आदि के अस्तित्व के बारे में पता चला है। पुरातत्वविदों के अनुसार इसके पहले किसी भी अध्येता व वैज्ञानिक को जंगलों के नीचे, जमीन में दबे नगर व मंदिरों के इतने स्पष्ट चित्र कभी देखने को नहीं मिले थे। शताब्दियों पहले मंदिर व सामाजिक सेवाओं से जुड़े भग्नावशेषों का ऐसा सम्मोहित करने वाला चित्र बनाना पहले असम्भव था। यह नगर सदियों पहले विस्मृत कर दिया गया था इसलिए उसे फिर सामने लाना एक अविश्वसनीय कहानी लगती है।

वायुयानों में लेज़र टेक्नोलाजी उपयोग करने में यान की धरती पर छोड़ी "पलसेज" दूरी को माप कर क्षेत्र का तीन कोणीय या त्रियामी चित्र खींच सकती हैं। पुरातत्वविदों का सर्वाधिक महत्व का साधन घनी झाड़ियों व जंगलों के आच्छादन को भेद कर जहां चाहे केन्द्रित कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज हम उन सम्भावनाओं की दहलीज पर खड़े हैं जहां हम नई सच्चाइयों, नई परिदृष्टि और उन ऐतिहासिक तथ्यों की रोशनी में निर्भीकता से कह सकते हैं कि हिन्दुओं को अपने अतीत के प्रति कोई हीन ग्रंथि या अपनी आस्था पर पड़ने वाले हमलों के प्रति सुविधावादी तटस्थ रुख अपनाना आवश्यक नहीं है। सेक्युलर राजनीति ने हमें समग्र रूप से इतना उदासीन बना दिया है कि हम भूल जाते हैं कि राजनीति के क्षेत्र में जो कुछ भी होता रहा है वह इस राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है। जिस इस्लामी आस्था के प्रचारक व सैकड़ों इतिहासकार बिना अपवाद के लगातार कहते रहे हैं कि यह फख्र की बात है कि हिन्दुओं के भव्य मंदिर ध्वंस किए व रौंदे गए जिसको अनेक यूरोपीय इतिहासकारों ने अपने ग्रंथों में दोहराया उसे किस दुष्प्रचार ने हमारे बीच के लोगों को नकारने का साहस नहीं दिया। यह नई खोज ही सिद्ध करेगी जो पूर्णतः निष्पक्ष व विज्ञान पर आधारित हो। पुरातात्विक सर्वेक्षण के निदेशकों के हाथ पर लगाई हथकड़ी हटाना जरूरी है, जिसके तहत दर्जनों मस्जिदों के दरवाजों पर यक्ष, याक्षिणी, पूर्ण घट, कमल के फूल हिन्दू शैली की सजावट व शुभ प्रतीक चिन्हों का भंडार देख कर भी तथा उपलब्ध प्रमाणों को देखकर भी वे अपनी जबान नहीं खोल सके। आज वैज्ञानिक खोज के उपकरणों के बल पर ये अपना दायित्व सरकारी अधिनियमों के बावजूद भी निभा सकते हैं। अब तक हम सबने देखी है सेक्युलरवादी ढोंगी राजनीतिबाजों और सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप की मुस्तैदी, पर अब इतिहास के कटघरे में वे खड़े किए जा सकते हैं जो राष्ट्र के प्रति अन्याय करते हैं। अयोध्या के प्रश्न पर मुस्लिम नेता व देश के कुछ अंग्रेजी समाचार पत्र दावा करते थे कि यदि यह सिद्ध कर दिया जाए कि उस जगह पर जहाँ बाबरी मस्जिद ही थी या उसके पहले मन्दिर था वे जगह हिन्दुओं को दी जाएगी। सारा निर्णय इस बात पर टिका था कि सिद्ध किया जाए कि वहाँ राम मंदिर था। उस समय की सोची–समझी चाल समय के अन्तराल के बाद भी आज क्यों नहीं लागू की जाती है और यह तर्क व मानदण्ड देश के सभी भागों में उठाना समीचीन होगा। हिन्दू को एक प्रश्न पर कम से कम आज एकजुट होना होगा। जब तक वह बिखरा रहेगा, उसके विचारों की कोई परवाह नहीं करेगा। सभी मार्क्सवादी व धर्मनिरपेक्ष उदारवादी कहलाने वाले अपने मुखौटों के पीछे धर्मनिरपेक्ष नहीं है वे मात्र हिन्दू विरोधी हैं, इतने धर्मों का तुष्टिकरण उनके लिए लोकप्रियता की सर्वाधिक उपयोगी सीढ़ी है। आज हिन्दुओं की मनोदशा का आकलन अंग्रेजी अखबारों की उनके लिए प्रयुक्त अपमानजनक कसौटी पर ही होना चाहिए न कि राजनीतिक त्रुटिहीनता की पाखण्डपूर्ण आचरण संहिता पर, मात्र इसीलिए हमारे प्राचीन मंदिरों का त्रासदीपूर्ण भूतकाल सिर्फ इतिहास के ग्रंथों के हाशिए पर स्फुट टिप्पणी बनकर न रह जाए, हमारे सरकारी तंत्र की इस दिशा में पहल अनिवार्य है।

ए–1002 पंचशील हाईट्स महावीर नगर
कान्दिवली (प), मुम्बई–400067
मो. 9820215464

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 02-03 \03 \2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

बी.बी.के डी.ए.वी. में हुआ महर्षि दयानन्द के 192 वें जन्मोत्सव का आयोजन

बी.के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर के स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र एवं आर्य युवती सभा की ओर से युगपुरुष एवं महान समाज–सुधारक महर्षि दयानन्द जी का 192 वाँ जन्मोत्सव बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम 'वैदिक यज्ञ' का आयोजन किया गया जिसमें परमात्मा से महर्षि की शिक्षाओं एवं आदर्शों का पालन करने, राष्ट्र की उन्नति एवं कल्याण की कामना करते हुए पूर्णाहुति डाली गईं।

कॉलेज प्राचार्या डॉ पुष्पिंदर वालिया ने उपस्थिति का हार्दिक अभिनन्दन किया और सम्भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द को हमारा सबसे बड़ा उपहार उनकी शिक्षाओं और आदर्शों पर चलना है। उन्होंने आगे कहा कि महर्षि ने वेदों की ओर लौटो–अवधारणा, नारी उत्थान, शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों के निवारण, आर्य समाजों की स्थापना द्वारा श्रेयस्कर परिवर्तन किए। कॉलेज के संगीत विभाग की ओर से मधुर भजन गायन की प्रस्तुति ने उपस्थिति को अध्यात्म के साथ जोड़ दिया।

इस अवसर पर स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र द्वारा चित्र–प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें कमर्शियल आर्ट और फाईन आर्टस की छात्राओं ने महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज एवं 'ओ३म्' के जीवंत–चित्रों का प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य युवा–पीढ़ी को वैदिक संस्कृति से जोड़ कर रखना था।

श्री सुदर्शन कपूर (अध्यक्ष, स्थानीय प्रबंधकर्त्री समिति), ने उपस्थिति का धन्यवाद ज्ञापन किया और उपस्थिति को महर्षि द्वारा बताए वैदिक एवं तर्क के मार्ग को अपनाकर समस्त सामाजिक कुरीतियों के नाश करने हेतु प्रेरित किया। श्री जे. के लूथरा (ऑनररी कोषाध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली) ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आशीर्वाद से आज 800 से अधिक डी.ए.वी संस्थाओं में 20 लाख के लगभग छात्र–छात्राएँ एवं 60 हजार के लगभग कर्मचारी कार्यरत है।

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 गुडगाँव में इक्कीस कुण्डीय यज्ञ का अनुष्ठान

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–14 गुडगांव के तत्वावधान में इक्कीस कुण्डीय यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसमें कक्षा छठी से लेकर बारहवीं तक के सभी छात्र पूर्ण मनोयोग से सम्मिलित हुए। अनुष्ठान का आरम्भ 'ओ३म्' ध्वनि के साथ गायत्री मंत्र के उच्चारण से किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उपाध्यक्ष एवं विद्यालय के अध्यक्ष श्री प्रबोध महाजन जी, विद्यालय के प्रबंधक

श्री आर.आर. भल्ला जी तथा विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा [illegible] यज्ञ में विधिवत पूर्णाहुति के उपरांत श्री प्रबोध महाजन जी ने वहाँ उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए दैनिक जीवन में निर्तय हवन के महत्त्व को प्रतिपादित किया। उन्होंने श्रेष्ठ जीवन हेतु उत्तम आहार, आचार एवं विचार पर बल देते हुए आर्य बनने के लिए प्रेरित किया। अपने वक्तव्य के अंत में छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएँ भी दी। विद्यालय के प्रबंधक श्री आर. आर भल्ला जी तथा विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा एरी जी ने भी छात्रों को आशीर्वचन के साथ आगामी परीक्षाओं हेतु प्रेरक वचन कहे। कार्यक्रम के आगामी चरण में छात्रों को गतसत्रीय पाठ्येत्तर गतिविधियों तथा उत्तम परीक्षा परिणाम हेतु पुरस्कार द्वारा प्रोत्साहित किया गया। अंततः कार्यक्रम का समापन शांति पाठ द्वारा किया गया।

महर्षि दयानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में 51 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती' जी के 'जन्मोत्सव' पर आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भूपिन्द्रा रोड, पटियाला द्वारा '51 कुण्डीय यज्ञ' किया गया। जिसमें कक्षा आठवीं, दसवीं एवम् बारहवीं के लगभग छह सौ विद्यार्थियों ने वार्षिक परीक्षा में सफलता की कामना करते हुए यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान कर परमपिता परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री पूनम सूरी जी (प्रधान डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) की सद्प्रेरणा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में किये गए इस महायज्ञ में श्री एच.आर. गन्धार (सलाहकार, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली) ने मुख्य यजमान व प्रिं विजय कुमार शर्मा

(क्षेत्रीय निदेशक, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पटियाला व फिरोजपुर जोनों ने विशिष्ट अतिथि के रूप में बच्चों को अपना शुभ आशीर्वाद दिया।

मुख्य अतिथि श्री गन्धार ने बच्चों को अपना शुभ आर्शीवाद देते हुए अपने सम्बोधन में कहा, '' विश्व का सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। हम दयानन्द के ऋणी हैं; जिन्होंने विश्व कल्याण के लिए वेदों का पुनः उत्थान किया। 'यज्ञ' वेदों के प्रचार का सबसे सरल उपाय है।'' आगे उन्होंने बच्चों को अम्बानी व बिल गेट्स जैसे विश्व

के अनेक सफल लोगों के उदाहरण देकर जीवन में मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। कठिनाइयों व परीक्षाओं से डरें नहीं बल्कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प, कठिन परिश्रम व लग्न के साथ कार्य करते रहें।

प्रिं. विजय कुमार ने इस प्रयास की भरपूर सराहना की और महर्षि देव दयानन्द के जीवन से उत्तम गुण और विचार ग्रहण करने का आग्रह किया। प्राचार्य प्रभाकर ने अपने उद्‌बोधन में विद्यार्थियों को यज्ञमयी जीवन अपनाने की प्रेरणा दी तथा निःस्वार्थ भाव से यज्ञ की तरह दूसरों केहित का सम्पादन करते हुए समाज के सर्वोत्मूखी विकास और राष्ट्र के उत्थान में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया।

शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण के साथ यह भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**